चौबोला–प्रगटे नंदकुमार गहिलीनी अंकम भर उरलाईजी ॥
ताके तनुकी तपत निवारी भक्तनके सुखदाईजी ॥
तातन चितै कह्यो तूकोरी कबहूँ नाहिं लखाईजी ॥
मनहरलीनोरूप दिखाई भये तरु ओट कन्हाईजी ॥ १ ॥
मिलिहरिसों सुख पायो ग्वाली देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
नाहिं जानतिमैं को कित आई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥
घरको पंथ भूलिगई नागरि इत उत डोलति जाईजी ॥
और सखी इत उतते आई सो तिन निकट बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बूझत सखि वा ग्वालिसों, कहा मगरही भुलाय ॥
भयो चेत तब कछुकतन, कहनलगी सो ताय ॥

चौबोला–कहन लगी सो ताय श्यामरंग मिल्यो ढुटौनाआईजी
तिन मोपर कछु कीनो टोना तबते मोहिं सुधिनाईजी ॥
मैंभरि गागरि शीश उठाई उन मोहिं अंकमलाईजी ॥
मोसों कह्यो कौनतू गोरी देखिनहीं ब्रजमाईजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि चितयो हँसिमोतन मैं लखि रही लुभाईजी ॥
तबहिं भयो अंतर कहुँ मोते मेरो चितहि चुराईजी ॥
कही सखी सों बात ग्वालनी लाजसाज बिसराईजी ॥
भईजलधि की बूंदजिमीसो सुनत बात हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–चली आप यमुना भरन, सावधान करिताइ ॥
देख श्यामसखि आवती, भये तरुओट कन्हाइ ॥

चौबोला–भये तरु ओट कन्हाइ तासुतन रहे श्यामटकलाईजी
गोरे वदन चूनरी सारी लहँगाछबि अधिकाईजी ॥
हाथन चूरी चाँरु विराजत कंकन अति छबि छाईजी ॥
सहज शृँगार उरोजनसोहै अंग अनूप सुहाईजी ॥ १ ॥

१ पास। २ समुद्र। ३ पेड़। ४ सुंदर।

ग्वालिन हरिको देखे नाहीं जानि गये बनमाईजी ॥
जल भर चली मनहिं पछिताई गागरि शीश उठाईजी ॥
औचक श्याम गही लट आई कहां चली अतुराईजी ॥
परस अंग उरसों करलायो ग्वालिनमन हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ऊपर रिस भीतरसुखी, कहति छाड़ि लटकान्ह ॥
उर परसत सकुचत नहीं, औरनसी जिन जान ॥
चौबोला–औरनसी जिन जान देखिहै ब्रज युवतीकोउ आईजी ॥
हाहा हरि मैं पाँयन लागों तुमको नंद दुहाईजी ॥
इतनेहीको मोहिं बावरी नंद किसौंह दिवाईजी ॥
देखत बदन तनकमैं ताते पहिचानत तोहिंनाईजी ॥ १ ॥
यों कहि श्याम छांड़ि लट दीनी वशकीनी मुसकाईजी ॥
चली भवन हरि मन हरिलीनो बसिगये दृगन कन्हाईजी ॥
पगद्वै चलत ठिठक रहजाई भूली मग जिहि आईजी ॥
रहे मनहिंमें श्याम समाई सुधि बुधि सब बिसराईजी ॥ २ ॥
दोहा–गृह गुरजनकी सुरति करि, मनमें गई लजाय ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृह, रहे श्याम मन भाय ॥
चौबोला–रहे श्याय मन भाय सखी सब संगकी बूझति आईजी॥
कहा यमुना तट देर लगाई कहां रही अब ताईजी ॥
औरहि दशा भईहै तेरी कहै न हमहिं सुनाईजी ॥
कहा कहोंरी तुमसों आली मोही मोहिं कन्हाईजी ॥ १ ॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट भई सो दशा हमारीजी ॥
लेगगरी शिर मारग डगरी मिले तहां बनवारीजी ॥
औचक आय गही लट मेरी कह्यो कौन तू प्यारीजी ॥
मैं मृदु वचन अमोल सुनतही ताकी ओर निहारीजी ॥ २ ॥
दोहा–जकी थकीसी ह्वै रही, उन परस्यो मोगात ॥

प्रफुलित हिय सुनि ग्वालनी, मन मोहनकी बात ॥
चौबोला–मनमोहनकी बात लाज तज दीनी सबन सुनाईजी ॥
सुनत बात सब सखी सयानी आप विलोकन चाईजी ॥
इक क्षण श्याम न बिसरत काऊ सुनतहिये हरषाईजी ॥
घर घरते धाई सब नागरि लेले गागरि आईजी ॥ १ ॥
चलीं यमुना तट अति अतुराई देख्यो कुँवर कन्हाईजी ॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे कुंडल लटक सुहाईजी ॥
पीत बसन लखि तडित लजाई अधर अरुणता आईजी ॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई ठगतहो नारि पराईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहा तुम्हारो ठग लियो, कैसे ठग पहिचान ॥
कौन ठग्यो कहो कब हमहिं, हमको किमि ठग जान॥
चौबोला-हमको किमि ठग जान कहा ठग्यो सो तुम देहु बताईजी
कहो नाम धरि तब हम जाने बोले कुँवर कन्हाईजी ॥
सरबस ठगत पलकके माहीं ठग्योसो जानत नाईजी ॥
ढगके लक्षण हमहिं बतावहु कैसे ठग ठहराईजी ॥ १ ॥
ठग लक्षण हमपै सुनलीजै फांसी मृदु मुसकानैजी ॥
रूप ठगोरी तुमहिं ठगतहो ब्रज तिय मन धन प्रानैजी ॥
फिरत विकल बेहाल तजी सब लोक लाज कुल कानैजी ॥
ठगी नंदके लाल विदित भई तिहुँ पुरमें सब जानैजी ॥ २ ॥
दोहा–तुम सब चितहि चुरातहो, तैसे हमहिं लगाय ॥
अपने लक्षण औरसों, कहत हो प्रगट जनाय ॥
चौबोला-कहतहो प्रगट जनाय तिहूंपुर बात प्रगट यह होईजी ॥
ब्रजतिय ठगत नंदको लाला जानत यह सब कोईजी ॥
यह नाहिं कहति कहत सब कोऊ सुर वेदहु नाहिं गोईजी ॥

१ देखना। २ बिजली। ३ ओठ। ४ जाहिर।

तीन लोक को ठाकुरजोई ब्रजतिय वश किये सोईजी ॥ १ ॥
यह सुनि सब ग्वालिन मुसकाई कहति श्याम सो ओईजी ॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानी नागरता हम पाईजी ॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई छांड़ि देहु लँगराईजी ॥
काहूलट गहि करत अचकरी काहुको नीर ढराईजी ॥२॥

दोहा—काउअ अंकम भरत हो, परसत हो उरआय ॥
ब्रजके लोगन पै हमैं, नीकी विधिहिं हँसाय ॥

चौबोला-नीकी विधिहिं हँसाय तिहारे भय कोउ जाय न आवैजी
बाट घाट डरपत सब आवत तुमको देखि डरावैजी ॥
बहुत अचकरी अब तुम ठानी नीर नकोउ भर पावेजी ॥
कहो तो यशुदहिं जाय सुनावें फिर ऊखल बँधवावेजी ॥ १ ॥
यह सुनि उठे हरी रिस करिकै इँडरी लई छिनाईजी ॥
कहो जाय सब अबहिं मातसों लीजो मोहिं बँधाईजी ॥
मोहिं कहति ठगचोर आय सब आप साह बनि आईजी ॥
डारी गगरी फोर कहत अब करहू चुगली जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—युवति कहति सब श्याम सों, इँडुरी देहु कन्हाइ ॥
गहिलेजै हैं मात पै, डरिहैं नेकहुँ नाइ ॥

चौबोला—डरिहैं नेकहु नाइ तुमहिं गहि यशुमति पैलेजाईजी ॥
बाट घाट तुम करत अचकरी डरतहो नाहिं कन्हाईजी ॥
इँडुरीले फोरी सब गगरी बरजे मानत नाईजी ॥
तब हरि चढे कदम पर जाई इँडुरी जलहि बहाईजी ॥ १ ॥
बदन सकोरत भौंह मरोरत मुरि मुरिके मुसकाईजी ॥
कहत कहो मैया सों जाई लीजो मोहिं बुलाईजी ॥
तुम सब जुर मिल मारन धाई तब मैं इँडुरी बहाईजी ॥
ऐसो तुम मोको करंपायो मानहु मोलहि ल्याईजी ॥ २ ॥

दोहा–यह सुनि युवती कहत सब, हरिसों मन मुसकाय ॥
कहत यशोदहि जाय हम, लेहैं तुमहिं बुलाय ॥
चौबोला–लेहैं तुमहिं बुलाय वेहि दिन बिसरे कुँवर कन्हाईजी॥
बांधे मात ऊखरी गोहन तब हम करी सहाईजी ॥
यहँई रहियो जैयो जिन कहुँ तुमको नंद दुहाईजी ॥
कान्हैं सोंहदिवाय ग्वालिं सब नंदधाम पर आईजी ॥ १ ॥
ऊपररिस अंतरहि सुखी सब ले उरहन तहां आईजी ॥
सद माखन जहां हरिको हितकरं मथति यशोमति माईजी ॥
तिहिं अंतर ब्रजवाम सकल चलि आवत भीर लखाईजी ॥
मैं जानत हरि इनहिं खिजाई ताते उरहन ल्याईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहत युवति सब रिसभरी, यशुदहि आय सुनाय ॥
ढीठ कियो ऐसो सुवन, बरजति नाहिं कन्हाय ॥
चौबोला-बरजति नाहिं कन्हाय यमुन जल भरन न कोऊपावेजी
रोकत घाट करत कुलकानी कहत सोई मन आवेजी ॥
काऊकी गगरी ढरकावे इँडुरी जलहि बहावेजी ॥
काऊको घट डारत फोरी गरियावत न लजावेजी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचावे तुम गुण जानति नाईजी ॥
अब नाहिन ब्रजबास हमारो अचकरि करत कन्हाईजी ॥
नेक नहीं समुझत मनमाई तुम बरजत हो नाईजी ॥
कहा करों सो तुमहिं कहोरी कहति यशोमति माईजी ॥ २ ॥
दोहा–गहिपाऊं ह्यां श्यामको, देऊं तुमहिं दिखाय ॥
तुमहूं जानत हो गुणन, बांध्यो ऊखललाय ॥
चौबोला–बांध्यो ऊखल लाय मारन लगी तबमैं अपनो वालेजी
बरज्यो मोहिं कह्यो जब सबहीं छांडि देहु गोपालेजी ॥
अब घर आवे तबहिं श्यामके करों फेर सोइ हालेजी ॥

लरकाई ते करत अचकरी मैं जानति नँदलालेजी ॥ १ ॥
अब जो पकरन जाउँ श्यामको ताहि गहन कहां पाईजी ॥
सुनतहिं मेरो नामको जाने कितहूंको भजि जाईजी ॥
यह अपराध क्षमो सब हमको ऐसे कहि समुझाईजी ॥
इहिं विधि युवती बोध कराई सबको घरन पठाईजी ॥

लावनी।

सब घरन चलीं ब्रजवाम धामनिज आवत कुँवर कन्हाई ॥
भइ भेट मगहिके बीच देखि हरि सकुचे निजमनमाई ॥
मनहीं मन रहे लजाय ग्वालि सब हरिसों कहत सुनाई ॥
हमजाय यशोमति पास तिहारी कीनी बहुत बड़ाई ॥
घरजावहु कुँवर कन्हाई, तुम बोलत यशुमति माई,
करिहैं तुम्हरी पहुनाई, यह सुनत वचन हरि हँसे
कह्यो समुझाय लेहुँ मैं माई ॥ सब घरन चलीं० ॥ १ ॥

देखी घर भीतर जाय सखिनहित रिस भरी यशुमतिमाई ॥
भीतरहि बनावै पाक रोहिणी तासों कहत सुनाई ॥
हरवे हरवे हरि जाय सुनत सब बातें चित मन लाई ॥
यहि कहत गयो कितभाज आज कब ऐहैं घरहिकन्हाई ॥
यों यशुमति वचन सुनावै, पनघट कूं रोकतजावै,
यमुना जल भरन न पावै, बेटी बहुनदे गारि तबहिं वे दौरी सब
यहां आई ॥ सब घरन चलीं० ॥ २ ॥
कीनी हरि उनकी छेर तबहिं वे जुर मिल सब ह्यां आई ॥
हाहा करिकै समुझाय सबनको निज निज सदन पठाई ॥
गागरि सब डारी फोर इँडुरिया दीनी जलहि बहाई ॥
ऐसे नित पनघट जात करत उत्पात डरत मन नाई ॥

यह कहति यशोमति माई, अब कित धौंगयो पराई, आयो नहिं कुँवर कन्हाई, जाति पांतिसों कहा लंगराई, मारे हुमानत नाई॥ सब घरनचलीं० ॥ ३ ॥

यह सुनतहि बोले श्याम मात सों पाछे ते भयपाई॥
तुम सुनो मात मेरी बात कहत यों मधुर वचन सुखदाई॥
मारनहीं जानत मोहिं गुणन भरी उनको जानतनाई॥
को जाने उनके चरित मोहिं खेलत ते लेत बुलाई॥
यमुना जल भरने जावे, मोहिं अपने निकट बुलावे, वे कहत सोई मन आवे, सब मनमें अति आनंद कहत तोहिं झूंठी बात बनाई॥ सब घरन चलीं ब्रजबाम धाम निज आवत कुँवर कन्हाई॥ ४ ॥

दोहा—मटकत गगरी गिरपरै, मेरो नाम लगाइ॥
फिर चितई देखे हरी, सुन्दर श्याम कन्हाइ॥

चौबोला—सुन्दर श्याम कन्हाइ देखकही काहे बात बनावैजी॥
मैं कहा तोको जानत नाहीं रहत मैं याही गावैजी॥
तुरतहि भूलगई रिसभारी हरि मुख देखत भावैजी॥
कहत कि उरहन ले सब आवें झूंठहि नाम लगावैजी ॥ १ ॥
मैं जानति गुण उन सबहीके बातें कहत बनाईजी॥
वे सब तरुण फिरत मदमाती मेरो बाल कन्हाईजी॥
इठलाती डोलत हैं जहां तहां भर यौवनमें छाईजी॥
अब उरहन वे आवहिं ले तो नीकी देहुँ बिदाईजी॥ २ ॥

दोहा—मैं बरजत मानत नहीं, तूकत उन ढिगजात॥
वे सब ढीठ गुवालनी, लावत झूंठी बात॥

चौबोला—लावत झूंठी बात कही यह चूमि वदन उरलाईजी॥

मनमोहन मन हरष बढ़ायो मगन यशोमति माईजी ॥
पनघट रोकत कुँवर कन्हाई घर घर बात जनाईजी ॥
श्याम वरण नटवर बपुकाछे मुरली मधुर बजाईजी ॥ १ ॥
करत अचकरी जो मन भावै यमुना भरन न पावैजी ॥
बैठत आप कमदकी डारी दै दै गारि बुलावैजी ॥
काऊकी गगरी गहि फोरै इँडुरी जलहि बहावैजी ॥
काऊको घट भूमि ढुरावै काऊ अंकमलावैजी ॥ २ ॥

दोहा—काऊसों मन लावही, काऊ चित्त चुराय ॥
ब्रज युवती सुनि सुनि सकल, देखनको उठ धाय ॥

चौबोला—देखनको उठ धाय दरश बिन तिनसों रहो न जाईजी॥
कोउ बरजे कोउ कहत कोटि विधि सबके ध्यान कन्हाईजी ॥
मन क्रम वचन तिन्हें रति हरिसों घर अँगना न सुहाईजी ॥
नँद नंदन क्षण बिसरत नाहीं सोवत जागत माईजी ॥ १ ॥
ब्रज युवतिनके हेतु करत हरि यह लीला सब श्यामाजी ॥
कृष्ण भजे जो जो जिहिं भावै तिहि तैसे सुखधामाजी ॥
चिंतत फलदायक हरिजनके चिंतामणि जिहि नामाजी ॥
सदा हरी जैसेको तैसे सबहीको सब ठामाजी ॥ २ ॥

दोहा—यह जुसुनी कीरति कुँवरि, पनघट कुँवर कन्हाय॥
देखनको हुलस्यो हियो, सखियन कहत बुलाय ॥

चौ०—सखियन कहत बुलाय चलहु सब ल्यावैं यमुनापानीजी॥
सुनत बात यह सब हरषानी चलबेको अतुरानीजी ॥
इक इक कलस सबन गहि लीने चलीं यमुन समुहानीजी ॥
देखे तहां कुँवर नँदलाला सुन्दर सुखके दानीजी ॥ १ ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढाये देखी प्रिया कन्हाईजी ॥
भरचो नीर प्यारी मुसकाई देखत हरि टक लाईजी ॥

चली घरहि यमुना जल भरके गागरि शीश उठाईजी ॥
मंद मंद गति चलत सुहाई मोहन मोहनी लाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बिबस भये प्यारी रसहि, चले संग उठ धाय ॥
सखिन बीच चलि नागरी, गागरि शीश सुहाय ॥

चौबोला-गागरि शीश सुहाय लटक अति नकबेसर छबिछाईजी॥
बदन बिंदु आड दिये केसर मोतिन मांग भराईजी ॥
लोचन लोल बिसाल सुभग अति मुरि मुरि चितवत जाईजी ॥
भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष शर सोहै हरि दृग मृगन लगाईजी ॥ १ ॥
मानहुँ सेना सजी कामकी अंग अंग छबिछावैजी ॥
ठठक चलत हरिको मन हरही अंचल ध्वज फहरावैजी ॥
रीझे श्याम निरख छबि प्यारी संगहि संग चले जावैजी ॥
कबहुँ रहत पाछे चितलाई कबहुँक आगे आवैजी ॥ २ ॥

दोहा–प्यारिहि निज अभिलाष हित, नाना भाव बतात ॥
कनक लकुट करमें गही, पंथ सँवारत जात ॥

चौबोला–पंथ सँवारत जात प्रियाकी जहांपर छांह लखावैजी ॥
तहां मिलावत निज तनु छाई तब मन अति सुख पावैजी ॥
छबि निरखत तनु वारि जनावै पटले शीश फिरावैजी ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहजावै निरखत कुँवरि सिहावैजी ॥ १ ॥
गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि अंगपर आवैजी ॥
ओढ पीतपट शीश नवावै इहि मिस ढिग ह्वै आवैजी ॥
प्यारी अपने चित अनुमाने मोहित भाव बतावैजी ॥
सखियन मध्य नागरी जावै लग्न लगन नहिं पावैजी ॥ २ ॥

दोहा–सखित सहित मोही प्रिया, कीन्हों चारित कन्हाय ॥
मिस करि निकसे निकट ह्वै, निरख बदन मुसकाय ॥

१ चाल। २ नथुनी। ३ नेत्र। ४ पकड़े। ५ बहाना। ६ सुख।

चौ०-निरख बदन मुसकाय सबहिको दियो काम उपजाईजी॥
भई विबस तब सब सुकुमारी अँगिया अँग दरकाईजी॥
सुधि बुधि बिसरी सबहि देहकी मोहीं कुँवर कन्हाईजी॥
पहुँची जाय घरन सब निज निज मन अटक्यो हरि माईजी॥१॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा कैसे मिलहिं कन्हाईजी॥
गागरि राखि घरन सब निज निज पुनि प्यारी ढिग आईजी॥
चलहु यमुन जल ल्यावें प्यारी यों सब कहत सुनाईजी॥
तिनको उत्तर देत न राधा रहे मन श्याम समाईजी॥२॥

दोहा-रही ठगीसी सोच मन, दृगन प्रेम जल छाय॥
कहा भयो तोको प्रिया, बूझति सखि समुदाय॥

चौ०-बूझति सखि समुदाय सोचति कहा हमते क्योंन कहोरीजी
काऊ लियो छीन कछु तेरो लियो चोरके चोरीजी॥
उत्तर देत हमें क्यों नाहीं बूझति तोय निहोरीजी॥
गहि गहि भुजा कहत सब गोरी यमुना चलहु किसोरीजी॥१॥
तब सखियन वृषभानु किसोरी बैठारी सब जोरैजी॥
हरिके चरित कहन तब लागी दृगन प्रेम जल ढोरैजी॥
कहो सखी कैसे चलिये अब वा यमुनाकी ओरैजी॥
गैल न छांडत छैल साँवरो रसिया नन्द किसोरैजी॥२॥

दोहा-यह शंका डरपत हियो, धरहि न कोऊ नाम॥
वह चंचल मानत नहीं, एक भांतिको गाम॥

चौबोला-एक भांतिको गाम देखि मोहिं मेरे संग उठ धावैजी॥
आवत मेरे निकट आप अरु मेरी छांह मिलावैजी॥
अरु मोहिं सन्मुख आय जुहारै देखत चितहि चुरावैजी॥
आगे चलत लकुट करलेही पंथ समारत जावैजी॥१॥
सोवह अतिहि निहोरे मोहीं फिर चितवत मुसकावैजी॥

गागरि शीश उठाय चलूं मैं वह चलजोरे आवैजी ॥
तब घटमें वह कांकरि मारे उचटि अंगपर जावैजी ॥
मेरे उर अंचल फहरावै सो वह देखि सिहावैजी ॥ २ ॥
दोहा-शीश फिरावत पीतपट, कर फेरत तन लाय ॥
छबि अपनी दरशायके, मेरो चितहि चुराय ॥
चौबोला-मेरो चितहि चुराय कबहिं मैं देखो कुँवर कन्हाईजी ॥
नेक नहीं दृग इत उत फेरे रहत एक टकलाईजी ॥
जहां जात मेरी परछाई मिलवत तहां निजछाईजी ॥
जब लगिलागन पावत नाई तब लगि अति अकुलाईजी ॥ १॥
भरत अंक बरजोर देखि मोहिं मोते अंग छुवावैजी ॥
सकुचत अति मन मेरो आली अरु कुलकानि सतावैजी ॥
ब्रजघर घर यह सोर श्यामको ताते अति भय आवैजी ॥
चितवत वह चित चोर सखी तब बिबस प्राण ह्वै जावैजी ॥२॥
दोहा-सांपछछूंदर गतिभई, कहिये कहा बखानि ॥
घरते निकसत बनत नाहिं, लोकलाजकुलकानि ॥
चौबोला-कोकलाज कुलकानि सतावे घरमें रह्यो न जाईजी ॥
तनघर मन जहां कुँवरकन्हाई रहत उतहि बिलमाईजी ॥
कितो करों आवत इतनाहीं वध्यो पीत पट माईजी ॥
करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची अबतो यह मनआईजी ॥ १ ॥
कुल मर्याद जाहु किन सोई हँसो लोग सबकोईजी ॥
होयजीवकी हानि लाभ कहा कहो सखी सो मोईजी ॥
सोनो कहा कान जिहिं टूटें अंजन आंधो होईजी ॥
कहा कांच संग्रहते होई जो अमोल मणि खोईजी ॥ २ ॥
दोहा-कांच किरचि जिमिकानिकुल, चिंतामणीकन्हाय ॥
कहालेउँ कहा तजहुँसो कहो मोहि समुझाय ॥

चौबोला–कहो मोहिं समुझाय मोहिंवह मृदुमुसकानिसुहावैजी
हरदी चूनो सन्यो रंगसो न्यारो होन न पावैजी॥
प्रतिब्रतराखौं श्याम सुन्दरते लोक लाज नहिंभावैजी॥
भलो बुरो कहहू किनकोई यह मेरे मन आवैजी॥ १॥
हरि अनुराग सिंधु मन मानी गोपिन प्रिया निहारीजी॥
गदगद कंठ पुलकतनु नैनन बहत प्रेमजल धारीजी॥
भई प्रेम वश गोपकुमारी सब कुल कानि बिसारीजी॥
वारहिवार कहत ब्रजनारी धनि वृषभानु दुलारीजी॥ २॥

दोहा–तैंजाने भलिभांति हरि, सत्य कहत हमतोय॥
मनमोहन मोहत मनहिं, तिय लखि सब वश होय॥

चौबोला–तियलखि सब वशहोयश्यामके अंगअंग छबिछावैजी
निरखत कोटि काम दुतिलाजै शोभा वरणि न जावैजी॥
सुभग श्याम दोउ पाणि पकरके जब मुखवेणु बजावैजी॥
तब यह दशाहोत सबहीकी जड चैतन्य भुलावैजी॥ १॥
वंसी शब्द सुनत सब मोहे बनमृग धाये आवैजी॥
होत विवस सब खगहि मौनगहि नेक न अंगडुलावैजी॥
वत्स पिवत पयनाहिं तृणहिं गहि दंत धेनु रह जावैजी॥
यमुना वहिवेते रहजावै जलचर बाहिर आवैजी॥ २॥

दोहा–जड चेतन चेतन जडंहि, सुनत होत कलवैन॥
कैविष कैमदकै अमी, किधौंभरचो रसमैन॥

चौबोला–किधोंभरचोरसमैन सुनत धुनिगृहवनकछुनसुहाईजी
चकित थकितही सब रहजाई गृहकारज विसराईजी॥
बाटघाट जहांमिलत कन्हाई मोहत रूप दिखाईजी॥
नई नई छबि अंगके माहीं झलकावत क्षणमाईजी॥ १॥
नंदसुवन सम सुन्दरको है ऐसो कौन सुहावैजी॥

यह सखि सबहीके मनभावै देखत ही सुख छावैजी ॥
लोकलाज कुल कौने कामहिं जो सुन्दर वर पावैजी ॥
बिना भागपावत नाहिं इनको यह मोहिं अगम लखावैजी ॥ २॥
दोहा–सुकृत बिना नाहिं पातइन, कह्यो मुनि सुन नँदराय॥
तुमहूँ इन हित तपकियो, तब तुम सुत करपाय ॥
चौबोला–तब तुम सुतकर पाय कह्योमुनि तातेमोमनआवैजी॥
कीजै जो सबके मनभावै हरिसों मिलन उपावैजी ॥
तपकीजे हरिके हितलागी पुजिये शिव वर पावैजी ॥
और कामना सकल नशावै नन्दसुवन वरचावैजी ॥ १ ॥
जप तप संयम नेम कियेते प्रभु प्रगटत पाषानेजी ॥
ताते सब तप कीजिये हरि हित और उपाव न आनेजी ॥
कीजे यह दृढनेम प्रात उठ चलिये यमुना न्हानैजी ॥
पूजहिं शिवकरि प्रेम प्रीतितो पावहिं वरपतिं कान्हैजी ॥ २ ॥
दोहा–तपकरि योगी जनरटैं, मनवांछित फलपाय ॥
सकल कामना देत शिव, कहत वेदयहगाय ॥
चौबोला–कहत वेद यह गाय हमहुँ अब यह वांछित मनठानीजी
नंदसुवन पद कमल सनेहा रहे सदाचित आनीजी ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी भानुसुता मनमानीजी ॥
यहै मंत्र सबके मनमान्यो धनि धनि ताहि बखानीजी ॥ १ ॥
कहति सबै कीजै सखि सोई मिलहिं श्याम सुखदाईजी ॥
वृथा जन्म नाहिं खोवें आली यह हमरे मनभाईजी ॥
यहै मंत्र सबने दृढकीनो प्रीति श्याम सों लाईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज गोपकुमारी जिनके पतिहि कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा--धनि धनि ब्रजकी गोपिका, धनिं वृषभानु कुमारि ॥
मन बच क्रम हरि हितलगी, लोकलाज सबडारि ॥

चौबोला–लोकलाज सब डारि हरी बिन नेकहु नाहिं सुहावेजी॥
निशिदिन श्याम दरशमन करहीं और कछू नाहिं चावेजी ॥
इक क्षण श्याम न उरते टरहीं नेम धर्म मन भावेजी ॥
जिनको यश शारद श्रुतिगावे विहारन बलि बलि जावेजी ॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्त किये सम यों हरि सो मन लावेजी ॥
सदा एक तुरिया रहित भइ और नकछु मन भावेजी ॥
ऐसो कौन प्रवीन कवी सो प्रेम सखिनको गावेजी ॥
हरि छबि जल मनमीन भई सब बिछुरन पल नाहिं चावेजी॥२॥

अथ चीरहरण लीला ॥

दोहा–भवन रवन विसराय सब, रटत हरी ब्रजबाल ॥
यहै बासना मन चहै, होयँ पती नँदलाल ॥
चौबोला–होंय पती नँदलाल वासना यह सब उरमें धारीजी ॥
हरिके हेत तपहि मन लायो धनि ब्रज गोप कुमारीजी ॥
षट दशसहस गोपकी कन्या करन लगीं तपभारीजी ॥
कृपाभई तब हरिको साधे भोग उपाधि बिसारीजी ॥ १ ॥
प्रातकाल यमुना जल न्हावें जलमें याम बितावेजी ॥
जपहिं उमापति हरि वृषकेतू श्यामसुन्दर वरचावेजी ॥
नैन मूंदकै ध्यान लगावें शीत भीत नाहिं ल्यावेजी ॥
बार बार यह कहत मनावे कान्ह कुँवर वरपावेजी ॥ २ ॥
दोहा–जलते बहुरि निकसि तब, पूजहिं शिवको जाय ॥
चन्दन बिल्व पत्र जल, अक्षत सुमन चढाय ॥
चौबोला-अक्षत सुमन चढाय प्रीतिकर सब मिलशिवहि मनावेजी
धूपदीप करि स्तुति गावें पुनि पुनि विनय सुनावेजी ॥
करहिं स्तुति गान बहुविधि जोर पाणि शिर नावेजी ॥

१ वेद चार प्रकारके । ऋग्, यजु, साम, अथर्वण ।

बारहि बार नवायमस्तक प्रेम सहित शिवध्यावेजी ॥ १ ॥
जय महेश कृपालु उमापति आनंद निधि सुखकारीजी ॥
कैलास पती कल्याण अग जग सकल सृष्टि अधिकारीजी ॥
जटाजूट त्रिपुंड्रशशि शुभ गंगरहे शिरधारीजी ॥
कमल नैन विसाल सुन्दर कुंडल अति छबि भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—नील कण्ठ भूषण भुजंग, भस्मी अंग विसाल ॥
अर्धंगा गौरी सुभग, उर मुंडनकी माल ॥

चौबोला—उर रुंडनकी माल पंचमुख त्रिलोचन छबि छाईजी ॥
कामप्रद सुखधाम शंकर देहो सोच मिटाईजी ॥
भगवान भव भय हरण हर भूतादि पती शिवराईजी ॥
प्रणत जन पूरण मनोरथ जगतपती सुखदाईजी ॥ १ ॥
वृषभ वाहन त्रिपुर अरिशिव मृगछाला मन भावेजी ॥
शूल पाणि त्रिशूल मूलनि कर त्रिशूल सुहावेजी ॥
सुर असुर नर नाग वन्दित मन बाछित फल पावैजी ॥
पूजते पद कमल प्रभु अब कृष्ण पती हम चावेजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जन मन पीर ॥
परमदानदीजैहमें, सुन्दर बर बलबीर ॥

चौबोला—सुन्दर बर बलवीर चाहति सब मागति हम तुम पाईजी
कृष्ण कमल पद ध्यान हमारे रहे सदा उरमाईजी ॥
इहि विधि ब्रजतियनेम निवाहे शिवको पूजि मनाईजी ॥
नित प्रति प्रात यमुन जल न्हावे प्रीतिरीत मन लाईजी ॥ १ ॥
सवितासों बहु भांति निहोरे गोद पसार मनावेजी ॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी जगत चक्षु सब गावैजी ॥
प्रणत मनोरथ पूरणकारी ऐसे विनय सुनावैजी ॥
काम हमारे तनहिं जरावै नंद सुवन बर भावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कृपा करो वर दीजिये, हो तुम दीनदयाल ॥
यह वर अब हम सबचहैं, होय पती नँदलाल ॥
चौबोला—होय पती नँदलाल ऐसे हरिके हित सब ब्रजनारीजी॥
करहिं नेम व्रत तप तनु धारी चाहत वर बनबारीजी ॥
गेह देहकी सुरत बिसारी कृषतनु भईं सुकुमारीजी ॥
बरस दिवस यों करत बिहानों जानी जन हितकारीजी ॥ १ ॥
मोहित शिव पूजत ब्रजनारी कामना सकल बिसारीजी ॥
सकल भावके हरिहैं ज्ञाता सकल देव सुखकारीजी ॥
देखी नेम प्रेममय सबही गोपिनको बनवारीजी ॥
भये प्रसन्न कृपालु आप मन हारि जनके हितकारीजी ॥ २ ॥
दोहा—भये जलहिंमें प्रगट हरि, जहँ सब ब्रजतिय न्हात ॥
नव किसोर वर बपुधरे, सुन्दर श्यामलगात ॥
चौ०-सुन्दर श्यामलगात प्रगट भये न्हात जहां गोप कुमारीजी॥
मींजत पीठ सबनके पाछे लीला करत मुरारीजी ॥
चकित भईं पाछे फिर हेरचो देखे श्री बनवारीजी ॥
व्रत फल प्रगटे कुंजविहारी मगन भईं ब्रजनारीजी ॥ १ ॥
नवल किसोर ध्यान मन लायो सोई रूप दिखायोजी ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी जल में अंग दुरायोजी ॥
हरिको सब अपने ढिंग जानें भेद न काऊपायोजी ॥
कहाति लाज लागत नाहिं तुमको नग्न देखने आयोजी ॥ २ ॥
दोहा—हँसि निकसे मन भावते, चीरहार लिये जाय ॥
हांक दई तब शपथ दे, वसन न लेहु कन्हाय ॥
चौबोला—वसन न लेहु कन्हाय कही तब डारे वसन कन्हाईजी॥
गोपिन तुरत दौरिकै लीने सब मन अति सुखपाईजी ॥
चीर फटे भूपण सब टूटे लेत न छांड़े जाईजी ॥

वसन अभूषण पहरन लागी आपुस माहिं लजाईजी ॥ १ ॥
यह कहिकहि पछितात सकल मिल ढीठो करत कन्हाईजी॥
अन्तर्गति आनंद अतीशय झूंठहिं सब खिजलाईजी ॥
कान्ह करत लँगराइ सखी अब लोगन कहत सुनाईजी॥
कहति चलो कहिये सब मिलके यशुमतिके ढिग जाईजी ॥२॥

दोहा–चलीं यशोमति पै सकल, प्रेम विवस सुधिनाहिं ॥
पुलक अंग अँगियादरकि, भूषण ले कर माहिं ॥

चौबोला-भूषण ले कर माहिं चलीं सब यह मिस उरहन ल्याईजी
चीर फार नख घात बनाये यशुमतिके ढिग आईजी ॥
देखो महरि श्यामके ये गुण कीन्हे हाल कन्हाईजी॥
चोली चीर हार दिखराये अरु यों कहत सुनाईजी॥ १ ॥
ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई और सुनो इक माईजी॥
बिनावसन हम न्हात जहां सब मींजत पीठ कन्हाईजी ॥
उर उघारि कहा तुमहिं दिखावें और कहत सकुचाईजी॥
भयो श्याम इहिलायक धों कब महरि कहत मन माईजी॥ २ ॥

दोहा–सुन युवतिनके वचनबर, हँसि बोली नँदनारि ॥
बात कहो जोनीबहै, वृथा बढावत रारि ॥

वृथा बढावतरारि कान्हको झूंठहि लावति नामाजी॥
चोरी रही छिनारी लावत बैठरहो निज धामाजी ॥
तुम चाहति हो गगन तुरैया गहन सकल मिल बामाजी॥
सो कैसे कर पावहु अब तुम तुम लायक नाहिं श्यामाजी ॥१॥
मैं बूझी सब बात तुम्हारी सुनो सकल ब्रजबालाजी॥
वृथा फिरत इठलात मष्ट करो सुनिहैं गोपी ग्वालाजी॥
इहि अंतर हरि आय गये घर शीश मुकुट बनमालाजी॥
अति कोमल तनु भूषण सोहैं बाल भेष नँदलालाजी॥ २ ॥

दोहा-जननी लीनी बाँह गहि, कहति सबनरसरोष॥
देखहुरी तुम सब इन्हें, इनहिं लगावत दोष॥
चौबोला-इनहिं लगावत दोष देखहू समुझि लाज उर धारोजी॥
इनहींके नख उरहिं दिखावत जान्यो भाव तुम्हारोजी॥
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो तुम कोउ और निहारोजी॥
कहति ग्वालनी महरि हमारे उलट दोष शिरडारोजी॥ १॥
देन उरहनो तुमको आई नीकी दई बिदाईजी॥
देखहुरी यह भाव कन्हाई आपुसमें बतराईजी॥
यमुना तीर मिले तबकी वह कहां गई तरुणाईजी॥
इनके गुण ऐसेको जानें औरहि देह बनाईजी॥ २॥
दोहा-घर आवत नन्हा भये, ऐसे तनुके चोर॥
देखि चरित नँदलालके, भई बाल मतिभोर॥
चौबोला-भईबालमति भोर कहतकछुसुधिबुधिमनाथिरनाईजी॥
सकुची बहुरि संभारि बिबसमें अपनी ओर लखाईजी॥
चली घरन ब्रजनारि निरख कर सुंदररूप कन्हाईजी॥
गईं घरन ब्रज गोपकुमारी चित हारि लियो चुराईजी॥ १॥
नेक न मनलागत घरमाईं धामकाज सुधिनाईजी॥
माता पिताको डरनहिं मानत रहत मगनमन माईजी॥
प्रातहोत सब गोपकुमारी यमुनाके तट आईजी॥
मोर मुकुट शोभित तनु चन्दन देखे कुँवर कन्हाईजी॥ २॥
दोहा-मकराकृत कुंडल सुभग, पीतबसनबनमाल॥
दरश देखि शीतल भई, सब मिल ब्रजकी बाल॥
चौबोला-सब मिल ब्रजकी बाल कहतयहआपुसमेंसबग्वालीजी॥
यमुनातट ठाढे मनमोहन चलहिं कवनविध आलीजी॥
कौनभांति कर यमुना न्हावै मोहन करत कुचालीजी॥

कैसे करि हम बसनउतारें देखत हैं बनमालीजी ॥ १ ॥
मींजत पीठ औचकहि आवै बसन लेत भजिजावैजी ॥
कहो फेर कैसे तब पावैं काल्हघाट नहिं आवैजी ॥
कहत सकुचकी बात उपर मन मन आनंद बढावैजी ॥
अंतर्गतिकी हरि सब जाने गोपिनको यह भावैजी ॥ २ ॥

दोहा—लज्जान्तर युवती करत, जानी कुँवर कन्हाय ॥
अंतर भलो न प्रेममें, सो अबदेहु मिटाय ॥

चौबोला—सो अब देहु मिटाय हरी तब यह मन बात उपाईजी ॥
ये जल भीतर न्हात उघारी देहुँ इन्हें समुझाईजी ॥
जो जलमें तिय नांगी न्हावे होत दोष अधिकाईजी ॥
नांगी परपति सन्मुख आवै तबहिं दोष यह जाईजी ॥ १ ॥
सो इनको यह दूषण टारों देहों लाज मिटाईजी ॥
करों आज इनसों विधि सोई यह हरिके मन भाईजी ॥
जो कछु चूकदासते होई आप सुधारत आईजी ॥
भजेहिं निरंतर हरिको भावे अंतर नाहिं सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अन्तर तजि हरिको भजै, वेद संत सोइ गाय ॥
बसन हरो इक बार सब, यह मन कियो उपाय ॥

चौबोला-यह मन कियो उपाय प्रभू तब सबकी दृष्टि चुराईजी॥
कदम वृक्ष चढ़ रहे लुकाई दृष्टिं परे कहुँ नाईजी ॥
जब गोपिन हरि देखेनाई हेराति इत उत माईजी ॥
जाने सदन गये नँदलाला न्हान यमुन तट आईजी ॥ १ ॥
धरे उतारि बसन भूषण सब यमुनाके तट माईजी ॥
नग्न होय स्नान करनहित बैठी जल ढिंग आईजी ॥
पैठि करति स्नान सकल मिल ग्रीवलों जल माईजी ॥
कनक कंज फूले मनु सुन्दर मुख छवि बरनि न जाईजी॥ २ ॥

दोहा—बार बार बूडत जलहि, प्रेम न हृदय समात ॥
शिवसों विनती करपुनी, रविको जोरतिहाथ ॥
चौबोला-रविको जोरति हाथ कामना[1] यहमन करि सब ध्यावेजी॥
नँदनंदनको पति करि पावें रविसों विनय सुनावेजी ॥
कामातुर सब गोपकुमारी हरिसों ध्यान लगावेजी ॥
मूंदहिं नैन दरश चितलावैं शब्द श्रवण सुख चावेजी ॥ १ ॥
भुज जोरत अंकम हित लागी प्रेम मगन ब्रजबालाजी ॥
प्रभु अंतर्यामी[2] सब जानें देखत मदन गुपालाजी ॥
धन्य धन्य ब्रज बाल करत ये मोहित तपहि विसालाजी ॥
क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी लखी प्रीति नँदलालाजी ॥ २ ॥
दोहा—मोहिं विरद राखे बनै, काहु भाव कोउ ध्याय ॥
मम[3] कारण बहु श्रम कियो, अब दुख देहुँ मिटाय ॥
चौबोला—अब दुख देहुँ मिटाय समुझि जन पीरा दया उपाईजी
उतरे तरुते श्रीबलबीरा हरिजनके सुखदाईजी ॥
प्रेम मगन युवती सब न्हावें रहीं ध्यान मन लाईजी ॥
हरि तब भूषण वसन लिये सब चढे कदमपर जाईजी ॥ १ ॥
सोरहसहस बधुनके लीने बसन अभूषण साराजी ॥
ले राखे सब तरुके ऊपर हरे एकही बाराजी ॥
करचो कदम तरु अति विस्तारा फूले सुमन[4] अपाराजी ॥
लैलै वसन डार अटकाये भूषण जहँ तहँ न्याराजी ॥ २ ॥
दोहा—पाटम्बर सारी विविध, नीलाम्बर छविभार ॥
श्वेत पीत नाना रँगन, धरे कदमकी डार ॥
चौबोला—धरे कदमकी डार देखि मन रही बसंत सिहाईजी ॥
सो तरु शाखा परम सुहायो जहँ बैठे सुखदाईजी ॥

---

१ अभिलाष। २ हृदयकी बात जान न हार। ३ मेरे। ४ फूल।

देखत कदम चढे नँदलाला बसन विना सब न्हाईजी ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं तब जल बाहिर आईजी ॥ १ ॥
जलते निकारि आय तट देख्यो बसन अभूषण नाईजी ॥
इत उत देखि चकित भइँभारी सकुचि जलहिंपै आईजी ॥
नाभि प्रयंत नीरमें ठाढी उरसों भुजा लगाईजी ॥
कपत शीतते अति अकुलाई बार बार पछिताईजी ॥ २ ॥

लावनी ।

ऐसो को भूषण बसन सबनके हरे एकही बारी ॥
तबते सब लिये चुराय वाय कछू लागी नेक अवारी ॥
नेकहु नहिं लागी देर अबहिं हम राखे तुरत उतारी ॥
जानाति हम मन यह बात सबन सब लीने कुंज बिहारी ॥
येसबके मनमें आई, निश्चयही लिये कन्हाई, मन मन सब रही लजाई ॥ दीन होय तब युवति पुकारीं जावे श्याम बलिहारी ॥
ऐसो को भूषण बसन० ॥ १ ॥

बिनती सुनिलीजे नाथ दरश अब दीजै आय दिखाई ॥
अम्बर हरि हमरे देहु मरत हम जलमें सकल जड़ाई ॥
थर थर कंपत ब्रजनारि देख नहिं सके श्याम सुखदाई ॥
कहा कहति मोहिं ब्रज बाम कदमते बोले कुँवर कन्हाई ॥
कत जलमें मरत जडाई, तुम लेहु बसन यहां आई, यों कहत श्याम सुखदाई ॥ तुम पट भूषण धर तीर विसर गई मैं कीनी रखवारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ २ ॥

अब रखवारी कछु देहु बसन तुम लेहु आय यहां सारी ॥
ऐसे जब हरि मुख सुन्यो सुनत ही मगन भई सुकुमारी ॥
धारचो कछु उरमें धीर नीरमें ठाढी सब ब्रजनारी ॥

सब हरि चरित्रको देखि हरषभई लखे कदम की डारी ॥
सब आपुसमें बतराई, देखो हरिकी चतुराई, यह हम पर घात उपाई ॥ हम सब जलके बीच उघारी मांगत है रखवारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ ३ ॥

तब हँसि बोली ब्रजबाल लाल तुम सुनहू कुँवर कन्हाई ॥
यह रखवारीकी बात आप निज हमको कहा सुनाई ॥
तन मन धन अर्पण कियो तुम्हें सो तुम कहा जानत नाई ॥
मन दियो हमारो तुम्में रहत सो तुमरे पास सदाई ॥
तुम सुनहु श्याम सुखरासी, लखि हैं कोऊ ब्रजवासी, निज जानि आपनी दासी ॥ विनती सुन लीजे नाथ हमारे अंबर देहु मुरारी ॥ ऐसो को भूषण बसन० ॥ ४ ॥

दोहा—जो तन मन मोको दियो, यों हँसि कह्यो कन्हाय ॥
तो मानो मेरो कह्यो, लेहु बसन यहां आय ॥

चौबोला—लेहु बसन यहां आय कहतहो सुनहू कुँवर कन्हाईजी
नग्न कौन बिधि आवें नारी कहा अनरीत चलाईजी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई कैसे देह दिखाईजी ॥
यह माति आप कहांधौ पाई तुम जो आज सुनाईजी ॥ १ ॥
पुरुष जात यह कहत न कबहूं ऐसी जिनहिं सुनावोजी ॥
कहत श्याम जो नगन न आवो तो अंबर नहिं पावोजी ॥
जो तन मन दीनों तुम मोको तोकत लाज रखावोजी ॥
मान लेहु तुम मेरो भाष्यो अन्तर दूर बहावोजी ॥ २ ॥

दोहा—शीत सहत हो काह तुम, लाजहिं देहु बहाय ॥
जल ते निकसो जोरकर, विनती मोहिं सुनाय ॥

चौबो०-विनती मोहिं सुनाय अबहिं ज्यों रविसों विनय उचारीजी
त्योंहीं सन्मुख मोहिं निहोरो मानहुँ बात हमारीजी ॥

यह सुनि सकल हँसीं व्रजनारी ऐसी कहो न मुरारीजी॥
हाहा लागहिं पाँयतिहारे पाप होत अति भारीजी॥ १॥
छाँडि देहु यह टेक कन्हाई लीजै भूषण साराजी॥
शीत मरत हम जलके माहीं दीजे वसन हमाराजी॥
जोतिय अंग पुरुष कहुँ देखे दूषण होत अपाराजी॥
नारिनग्न नाहिं देखिये मोहन सुनहू नन्ददुलाराजी॥ २॥

दोहा—तुमको दया न आवही, हो तुम निठुर कन्हाइ॥
सोइ करो जो सोहही, तुम पटतर कोउ नाइ॥

चौबोला—तुम पटतर कोउ नाइ आजते हम सब दासतिहारीजी
कैसे अंग दिखावैं नारी हठ न करो बनवारीजी॥
अंग दिखाये भूषण पैहो नातर रहो उघारीजी॥
थोरेहीमें भलो मनावो मानहुँ बात हमारीजी॥ १॥
कत अंतर राखतिहो हमसों बार बार समुझाईजी॥
यह दूषण लागहि सब हमको लेहु वसन यहां आईजी॥
मोहित तप कीनो तुम भारी अब कत मनाहिं लजाईजी॥
मैं अंतर्यामी सबजानी करिहौं तुम मन भाईजी॥ २॥

दोहा—पूरण तप तुम्हरो भयो, लाज देहु सब डारि॥
सुनि यह मोहनके वचन, मगन भई व्रजनारि॥

चौबोला—मगन भई व्रजनारि तबाहिं सब मिल यह बात उपाईजी
अबतो टेकपरे बनवारी करिहैं मनकी भाईजी॥
कहाति परस्पर मिल सब गोपी हरि हठ छांडत नाईजी॥
बसन बिना कैसे बनि हैं अब कौन भाँति घरजाईजी॥ १॥
चलो लीजिये चीर सखीरी और उपावहि नाईजी॥
मनमोहन बलबीर कछू जो सुनो सो कहत कन्हाईजी॥
यह विचार जल बाहर आई बैठी तटहि लजाईजी॥

बारबार हरि निकट बुलाई तबहिं अधिक सरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हाहा हठ नहिं कीजिये, देहु हमारे चीर ॥
मानेंगी उपकार हम, वहुत है शीतसमीर ॥
चौबोला–बहुतहै शीत समीर नाथ तुम हम सब दासतिहारीजी
हम सबकी पत हाथ तुम्हारे राखि लेहु बनवारीजी ॥
छांडहु लाज करहु ममबानी ऐसे कहत मुरारीजी ॥
देहों तुमको नन्ददुहाई आवहु यहां मिल सारीजी ॥ १ ॥
पहिरो बसन आय इत सबही देवहु लाजबहाईजी ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी करिहैं हरि मनभाईजी ॥
कर कुच अंग ढांकि भई ठाढी बदन नवाये आईजी ॥
गई कदम तर कहति श्यामसों देवहु बसन कन्हाईजी ॥
दोहा–हाथ जोरि विनती करी, बोले तब घनश्याम ॥
जो कहिहो करिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रजबाम ॥
चौबोला–हँसि बोलीं ब्रजबाम हमहुँ कबूलेहैं दाँव बगाईजी ॥
उभय कमल कर जोर सकल मिल हरिसों विनय सुनाईजी ॥
मांगति सकल निहोरि कहति सब दीजे बसन कन्हाईजी ॥
रीझे लखि गोपिनकी प्रीती भक्तनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
निश्चय भक्ति देखि हरि बोले धन्य धन्य ब्रजनारीजी ॥
देखि निरंतर गोप कुमारी दिये बसन बनवारीजी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं प्रेम प्रीति सुकुमारीजी ॥
तब हँसि बोले कुंजविहारी मैं पति तुम मेरी प्यारीजी ॥
दोहा–कह्यो हमारो मान अब, अंतर देहु मिटाय ॥
शरद रात तुम आश सब, मैं पुरहों निज आय ॥
चौबोला–मैं पुरहों निज आश सबनकी लेहों अंकम मालाजी ॥
अब तप करि तुम मति तनुगारो कहत नंदके लालाजी ॥

विरह ताप तनुको हरलीनो करसों परसि गुपालाजी ॥
बिदा करी हँसि नंदकेलाला सदन गई ब्रज बालाजी ॥ १ ॥
मन मन कहत कृष्ण वर पायो गोपी अति हरषाईजी ॥
बिहारन हरि जनके सुखदाई आये सदन कन्हाईजी ॥
इहि विधि हरि सब ब्रजकि तियनसों सुन्दर प्रीति बढ़ाईजी ॥
ब्रजविलास बिलसत विधि नाना अखिल लोकके राईजी ॥ २ ॥

अथ वृन्दावन वर्णन लीला ॥

दोहा—सब विधि करि सब विधि सुखद, सुन्दर घन सुखकन्द॥
मुदित सकल ब्रज गोपगण, निरखत गोकुल चन्द ॥
चौबो०-निरखत गोकुल चन्द हरिहि लखि मात पिता सुखपावेजी
बालभाव बहु लाड लडावे आनँद उर न समावेजी ॥
नवल किशोर सुभग तनु श्यामा निरखन ब्रजतिय आवेजी ॥
ग्वाल बाल सब सम करि मानें प्रीति रीति मन लावेजी ॥ १ ॥
नित उठ गाय चरावन जावें खेलत ब्रज नँदलालाजी ॥
इक दिन सोवत सदन कृपाला आये बुलावन ग्वालाजी ॥
कहत सखा चलो गाय चरावन जननि कह्यो उठो लालाजी ॥
उठहु तात मैया बल जाई टेरत बलि अरु ग्वालाजी ॥ २ ॥
दोहा—दरश दिखा सुख दीजिये, करहु कलेऊ लाल ॥
भई बेर बनको अबै, अब मति सोउ गुपाल ॥
चौबोला--अब मतिसोउ गुपाल सुनत हरि सोवतमें अलसावेजी॥
सुनत बात आलस मनमाई उठन मनाहिं मन चावेजी ॥
कबहूं वसन ढांकि सुख सोवे कबहुँ उघार लखावेजी ॥
खेलत नैन पलक झुकि आवे लखि जननी सुख पावेजी ॥ १ ॥
उठो लाल जननी जब बोली तब चितये सुखदाईजी ॥

पटगहि पुनि पुनि फेरत मुखपर उठे तुरत हरषाईजी ॥
कबके टेरत ग्वाल कहत सब आवहु कुँवर कन्हाईजी ॥
चलहु बनाहिं नँद नंद बेग अब आगे निकस गई गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–यह सुनि हरि तुरतहिं उठे, झारी लई मँगाय ॥
दुहुँ भैयन दतवन कियो, पोछे मुख निज माय ॥
चौबोला–पोछे मुख निजमाय कहति कछु करहु कलेउ कन्हाईजी
एक थार दोउ सुत बैठारे परसाति यशुमति माईजी ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा मिल जेवत दोउ भाईजी ॥
परसत बैठी निकट यशोदा अतिहि मोद मन माईजी ॥ १ ॥
मात प्रेमते अति तृपताये कर अचवन दोउ भाईजी ॥
द्वारे टेर उच्यो इक ग्वाला चलहु वनाहिं सुखदाईजी ॥
बल मोहन आवहु दोउ भाई बनाहिं गई सब गाईजी ॥
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराये तुरत उठे दोउ भाईजी ॥२॥
दोहा–मुरलि लकुट पट लै हरी, चले वनहिं मनलाय ॥
केतिक दूर गैया गईं, ग्वालहिं बूझत जाय ॥
चौबोला–ग्वालहिं बूझत जाय कछुक बन पहुँची ह्वै हैं जाईजी
कछु मगहीमें जात कन्हाई सुनत चले हरषाईजी ॥
बन पहुँचत सुरभी लइजाई बल मोहन दोउ धाईजी ॥
कहत सखन सों जात कितहि तुम हमहूं पहुँचे आईजी ॥ १ ॥
हम जेवन लागे दोउ भाई तुम आये अतुराईजी ॥
अब हम दूर चरै हैं गैया तुम सँग रहत बलाईजी ॥
यह सुनि सखा धाय सब आये हरिको अंकम लाईजी ॥
तुम हो सबहिनके सुखदाई हमें मति तजहु कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–आज चलहु हरि कुमुद बन, शीतल सघन सुहाइ ॥
सुनत कह्यो हरि हरषि मन, नीक कही यह भाइ ॥

चौबोला—नीक कही यहभाइ सबहिंकी गाय करो इक ठोरीजी ॥
लैलै नाम गाय सब टेरत धूमरि राती धोरीजी ॥
कबरी पियरी गौरी कजरी खैरी फुलही भोरीजी ॥
रौची मोडी लीली कपली लाखी नैनी चोरीजी ॥ १ ॥
ऐसे सुरभी[1] टेर बुलाई चले कुमुद बन धाईजी ॥
तब बलि कह्यो दूरमति जाहू लरिहैं यशुमति माईजी ॥
बलिको कह्यो मान सुखदाई लीने सबन बुलाईजी ॥
कहत सबन समुझाय हरी अब कौन कुमुद बन जाईजी ॥२॥

दोहा—बुरो मानि हैं नंद सुन, और यशोमति माय ॥
चलिये वृन्दावन सुखद, ल्यावहु गाय फिराय ॥

चौबो०-ल्यावहु गाय फिराय यमुन तट सुरभी चरत अघाईजी
फेरीं गाय ग्वाल सब धाये श्याम चले अगवाईजी ॥
जात चले वृन्दावन मोहन संग सखा समुदाईजी[2] ॥
करत कुलाहल[3] आनँद भारी पहुँचे सब बन माईजी ॥ १ ॥
सुरभी गण चहुँ दिश बगराई कहत सखा हरषायेजी ॥
जादिन अघहत श्याम सिधाये तादिन ते अब आयेजी ॥
बहत मनोहर त्रिविधि[4] बयारी देखत बन सुख पायेजी ॥
देखत श्याम सखन सँग लीने विटप चहूं दिश छायेजी ॥ २ ॥

दोहा—नव किशलयदल सुमन मनु, वसंत शृंगार बनाइ ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर अमित, फलके डारि सुहाइ ॥

चौबोला—फलके डारि सुहाइ मनहुं सब देखि श्याम सुखपाईजी
देत भेट तरु शीश नवाई हरिके सन्मुख आईजी ॥
गुंजत भँवर पुंज छबिपाई स्तुति मनहुँ सुनाईजी ॥
जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ठाढे एकहिं पाईजी ॥ १ ॥

१ गाय। २ बहुत। ३ हल्ला। ४ शीतल, मंद, सुगंध समीर।

वेली विविध ललित सब लपटीं फूल रही शुभकारीजी ॥
सोभित सहित शृंगार किये जिमि निज निज पति संग नारीजी॥
मंद पवन लागत कबहूं तब हाल उठत सब डारीजी ॥
बारबार पुलकित मनहूं सब आनँद उर अति भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कुंज पुंज मंजुल सुखद, शीतल सुगंध सुहाय ॥
हरि विश्रामहिं हेतु जनु, रचे विचित्र बनाय ॥

चौबोला—रचे विचित्र बनाय बोलत कल खगबहु रंग सुहावेजी॥
कीर कपोत कोकिला संगे मनहुं अनँद भरे गावेजी ॥
मधुर सुरन बाजत जनु बाजे तरुदल पवनहिं लावेजी ॥
क्रीडत मर्कट शुभगति लीने मनु नटकला दिखावेजी ॥ १ ॥
मनहुँ तमासगीर सब ठाढे मृग गण चितवत आईजी ॥
पाय श्यामघन हित बनराई करी मनु अनँद बधाईजी ॥
बनसोभा कछु बरनि नजाई रहत बसंत सदाईजी ॥
जहां सुभाव काल गुण नाहीं वैर भाव नहिं राईजी ॥ २ ॥

दोहा—सदा एक रस रहतहै, परम सुखनकी रास ॥
चिंतामणि मय भूमि शुभ, कोमल विमल प्रकास ॥

चौ०-कोमल विमल प्रकाश बनहिको को कबि बरन बतावैजी॥
शेष महेश गणेश ब्रह्म सुर पार न कोऊ पावैजी ॥
श्रीवृन्दावन धाम सुखदकी महिमा कहत न आवैजी ॥ १ ॥
देखि श्याम बन भये सुखारी बैठे तरुतर जाईजी ॥
वृन्दावनकी करत बड़ाई बलिसों कहत सुनाईजी ॥
मैं यह बन देखत सुख पाऊँ लागत अति सुखदाईजी ॥
सुरतरु धेनु रमा बैकुंठहु याहि देखि बिसराईजी ॥ २ ॥

दोहा—यह यमुना तट सुभग अति, सुरभी सुखद चराय ॥
यह सुख मोहिं त्रिभुवन नहीं, ताते तनु धर आय ॥

चौबोला—ताते तनु धर आय दाऊ तुम सत्य रहो उर धारीजी ॥
यह वृन्दावन जड़ माति जानो है यह अति सुखकारीजी ॥
चितवनमें आनँद की राशी भक्त जनन भयहारीजी ॥
परमधाम मम परम सुहावन पावन पावन कारीजी ॥
जे तरु वृन्दावनके माई कल्पवृक्ष सर नाईजी ॥
कल्पवृक्षके तरुतर जावै मांगत तब फल दाईजी ॥
वृन्दावन तरु चिन्तत जोई प्रेम भक्ति सो पाईजी ॥
जाके वशमें रहत सदाई तजि अपनी प्रभुताईजी ॥ २ ॥

दोहा—वृन्दावन अनुराग नर, प्रेम भक्ति सो लहत ॥
श्रीमुख बरण्यो श्यामजू, वृन्दावनको महत ॥

चौबोला—वृन्दावनको महत सुनत मन बलदाऊ सुख पावैजी॥
सखावृन्द सुनि श्रीमुख वाणी आनँद उर न समावैजी ॥
चितवत हरि मुख पलक बिसारी जिमि चकोर शशि चावैजी॥
निज लीला हरि प्रगट जनावै आपुसमें बतरावैजी ॥ १ ॥
पुनि पुनि पुलक कहत हरषाई हरिसों विनय सुनाईजी ॥
बार बार तुमको करजोरे हमे माति तजहु कन्हाईजी ॥
जहां जहां तुम तनु धारि आवै तहां तहां चरण छुवाईजी ॥
ब्रजते तुम्हें न टारों भैया हँसि बोले सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम मेरे मन भातहो, मैं तुमते सुख पात ॥
या ब्रज सम त्रिभुवन नहीं, ब्रज तज अंत न जात ॥

चौबोला—ब्रज तज अंत न जात तुम्हारे हेत वेद यह धारीजी ॥
तुमते ब्रजलीला विस्तारी कहत सखन बनवारीजी ॥
हैयह ब्रजमोको अति प्यारो रहत न मैं ब्रज टारीजी ॥
ऐसे गुप्त बात ग्वालनसों हँसि हँसि कहत मुरारीजी ॥ १ ॥
सखा वृन्द सुनि हरिकी वाणी रहे सकल हरषाईजी ॥

प्रेम पुलकि तनु मुदित मनहिं मन देह दशा बिसराईजी ॥
धनि ब्रज धनि वृन्दाविपिनहीं धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
हम सब अज्ञ न जानत नाहीं तुम्हरे गुण सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तुम प्रभु हम सब दासहैं, हो तुम हमरे नाथ ॥
कबधों गोप तनु धारिहो, दुर्लभ तुमरो साथ ॥
चौबोला–दुर्लभ तुमरो साथ नजाने बहुरि अहो सुखदाईजी ॥
कब तुम फिरिहो सुरभिनसाथा लिये लकुट करमाईजी ॥
कब धौं फिर ऐसे सुख देहो खैहो छाक छिनाईजो ॥
बलि बलि जैहैं श्याम तुम्हारी विनती सुनहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावहु अधर सुधारसवारीजी ॥
तुम्हें नंदकी सौंह दिवावें मानहुँ अरज हमारीजी ॥
तुमरे मुख यह बाजत नीकी हमरी जीवन प्यारीजी ॥
सुनत सखनकी कोमल वाणी भक्तनके हितकारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भक्त वत्स प्रभु दीनहित, गुण गंभीर कृपाल ॥
भये प्रसन्न जन हितहरी, चितये नैन बिसाल ॥
चौ०-चितये नैन बिसाल लकुटको निकट धरचो सुखकारीजी ॥
पाछे मुरलीको गहि लीनी मन अति हरप मुरारीजी ॥
पकर दुहूँकर अधर धरी तब मुरली टेरउचारीजी ॥
मोहि लियो चर अचर जलहि थल नन्दसुवन बनवारीजी ॥ १ ॥
भई थकित गतिपै यमुना जल कियो शयन नँदलालाजी ॥
रहे जहाँ तहँ चित्र लिखेसे खग मृग मौन बिहालाजी ॥
उपजावत हैं राग रागनी गावत हैं देतालाजी ॥
सखा वृन्द सुनि तन मन वारत निरख रहे छवि ग्वालाजी ॥ २ ॥
दोहा–देत परमसुख सखनको, सुन्दर श्याम सुजान ॥
धन्य धन्य कहि ग्वालसब, वारत तन मन प्राण ॥

चौबोला—वारत तन मन प्रान सखनको ऐसे श्याम रिझावैजी ॥
हँसत ग्वाल दे तारि मुरलिमें नाम सबनको गावैजी ॥
लेत हमारो नाम कन्हाई आपुसमें बतरावैजी ॥
ऐसे हमको गाय सुनावो यों हरि सबनसुनावैजी ॥ १ ॥
लै मुरली तिनके कर दीनी अति मनहरषि कन्हाईजी ॥
लेले निजकर सकल बजावत हरिके स्वरनहिं आईजी ॥
आसपास सोहत सब बालक मध्य श्याम सुखदाईजी ॥
हँसि हँसि सबके चितहि चुरावत अति आनँद मनमाईजी॥२॥

दोहा—जो स्वरगायो आपहरि, सोनकाउ पै आय ॥
कहत सखा सो कोन है, हरि सम सकै बजाय ॥

चौबोला—हरि सम सकै बजाय जासु शिव ब्रह्मा ध्यानलगावैजी
सहसाननित नव गुण गावै शारदपार न पावैजी ॥
सुर मुनि कोऊ पार न पावै सो हरि वेणु बजावैजी ॥
विहारन हरिजनके हितकारी भक्तवत्सल कहावैजी ॥ १ ॥
कारण करण अनंत गुणहिं हरि निगमनेति जिहिंगावैजी ॥
सो ग्वालन सँग वेणु बजावै देखहु भक्त प्रभावैजी ॥
वृन्दावन की रेणुवाञ्छित ब्रह्मादिक ललचावैजी ॥
तहां श्याम सुख देत सखन सँग नित उठ धेनु चरावैजी ॥ २ ॥

अथ द्विजपत्नी याचनलीला।

दोहा—विहरत वृन्दावन हरी, लीला विविध बनाय ॥
कबहुँ सखन सँगगावहीं, कबहूँ वेणु बजाय ॥

चौबोला—कबहुँक वेणु बजाय कबहुँ हरि गैयन घेरत धाईजी ॥
कबहुँक यमुनाके तट जावै खेलत कुँवर कन्हाईजी ॥
करत कुलाहल आनँद भारी देत गारि हरषाईजी ॥

१ मित्र। २ बराबर। ३ शेषनाग।

ऐसे लीला करत अपारा ग्वालन भूख लगाईजी ॥ १ ॥
कहत भये सब हरिसों आई क्षुधालागि अधिकाईजी ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी निज मन बातउपाईजी ॥
सुनि सुनि मेरे गुणगण गाना द्विजपत्नी मनलाईजी ॥
तिनको दरशन आज दिखाऊं करिहौं तिन मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब हरि ग्वालन सों कह्यो, करत यज्ञद्विजआय ॥
तिनके निकटहि जाय तुम, यों कहियो समुझाय ॥

चौबोला-यों कहियो समुझाय तुमहिं ढिंग हमकोकृष्णपठायेजी
यहि विधि कहियो जाय सबनसों भोजन मांगन आयेजी ॥
यह सुनि ग्वाल गये तहां सबही जहां विप्रसमुदायेजी ॥
यज्ञ करत अहमितलीन्हे सब विद्याको बल पायेजी ॥ १ ॥
ग्वालन करी प्रणाम द्विजनको यह कर जोर सुनाईजी ॥
मांग्यो है भोजन तुम पाहीं पठये कुँवर कन्हाईजी ॥
आये इतहि चरावन गाई राम कृष्ण दोउ भाईजी ॥
ते कछु आजभये हैं भूखे सुनि द्विजगये सुखाईजी ॥ २ ॥

दोहा—करीरसोई यज्ञहित, अहिरन कौन खवाय ॥
फिरेग्वालद्विजवचनसुनि, कहीश्यामसोंआय ॥

चौबोला—कही श्याम सों आय सुनतही बोले कृष्णमुरारीजी ॥
ये द्विज कर्म धर्म लपटाने कहत बलहि बनवारीजी ॥
तब ग्वालनसों कह्यो कन्हाई जाउ जहां वे नारीजी ॥
उनको है दृढभक्ति हमारी सुनि हैं बात तुम्हारीजी ॥ १ ॥
उन सों मांगो जाय कहो यों भूखे भये कन्हाईजी ॥
तब द्विजनारिनढिग सब आये हाथ जोर शिरनाईजी ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हाई भूखे हैं दोउ भाईजी ॥
मांग्यो है कछु भोजन तुमसों कहो सो कहि हैं जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि ग्वालनके वचन सब, हर्षिउठीं द्विजबाम[1] ॥
कहति हमारोभाग्यधनि, भोजन माग्यो श्याम॥
चौबो०-भोजनमांग्योश्यामकरतरहींसुनिनिताजिनकोध्यानाजी॥
तिनको भोजन ले सब चालीं सफल जन्म निज जानाजी ॥
षटरस व्यंजन विविध विधाना अमित भांति पकवानाजी ॥
खीरखांड माखन सिखरन दधि अरु मेवा विधि नानाजी॥ १ ॥
कहँ लग वरणों कहूँ प्रकारा प्रेमसहित द्विजनारीजी ॥
बहुतिक ग्वालनके करदीने भारि भारि कंचन थारीजी ॥
उपजी प्रीति हृदय अतिगाढी नैनन दरशमुरारीजी ॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी निरखन गोप विहारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ग्वालन सों पूछतिचली, कित हैं कुँवर कन्हाइ ॥
जिनके पति जो घरहते, जानदेत सो नाइ ॥
चौबोला–जानदेत सो नाइ कहत कित जात चली अतुराईजी॥
लोकलाजतनु दशा भुलाई सुधि बुधि सब विसराईजी ॥
तिनसों कहत भईं ते नारी हमको श्याम बुलाईजी ॥
मांग्यो है भोजन उन हमसों जात देन उन पाईजी ॥ १ ॥
तिनको दरश देखि हम आवें बहुरि तुम्हारे पासेजी ॥
यह सुनि पति अति क्रोधभये तब तिन्हैं दिखायो त्रासैजी[2] ॥
कहत कि तुम कित भईं बावरी बैठति नाहिं अवासैजी[3] ॥
जिनके उर नँदलाल बसे हैं श्याम सुन्दर सुखरासैजी ॥ २ ॥
दोहा–बसे लकुट[4] मुरली लिये जिनके उर नँदलाल ॥
कौन भांति रोंकी रुकैं, तिनहि नभययमकाल ॥
चौबो०-तिनहिं नभययमकाल कहतिपतिकहाहमपरतुमतीजैजी
कहारोक अपयश शिरलेहो वृथा विलम्ब न कीजैजी ॥

१ ब्राह्मणोंकी स्त्री । २ भय । ३ घर । ४ छड़ी ।

त्रिभुवन पति प्रभु मदन गुपालहि हमहिं देखने दीजैजी ॥
हाहा दान देहु यह स्वामी मानि हमारी लीजैजी ॥ १ ॥
वेहैं यज्ञ पुरुषभगवाना अन्तर्यामि कन्हाईजी ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं बिसारी तुमसब मति विसराईजी ॥
बीतत जात अवधि दरशनकी कहँ लग कहुँ समुझाईजी ॥
जो तुम स्वामी मानत नाहीं तो कहैं सत्य सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मन तो मिल्यो नँदलाल सों, कत रोकत हौ खाल ॥
लेहु सँभारहु देह यह, को राखै जंजाल ॥

चौबोला–को राखै जंजाल जासु तुम अपनी रहे बनाईजी ॥
नहिं राखों यह देह हरीके रहिहों चरणन माईजी ॥
जो निहचै नहिं श्याम सन्देहा वृथा देह किम पाईजी ॥
देखोंगी छवि हरिकी सुन्दर सबसों आगे जाईजी ॥ १ ॥
पतिकी कानि मिटाय तीयसो देह गेह तजि जावेजी ॥
प्रथमहिं पहुँची ते सब आगे जो द्विज रोक रखावेजी ॥
कठिन प्रेमको पंथहि कहिये तहाँ नेम कहां आवेजी ॥
कहत सकल यह ग्रंथ साध जहँ नेम तहँ प्रेम न आवेजी ॥२॥

दोहा–लेले भाजन द्विजतिया, पहुँचीं सब बनजाइ ॥
ठाढे भुजगहि सखन सँग, नटवर भेष कन्हाइ ॥

चौबोला-नटवर भेष कन्हाइ मुरलिकर कमल नैन छविछावेजी॥
मोर मुकुट वैजंतीमाला लखत तियन मनभावेजी ॥
कुंडल अलक तिलक झलकाई निरखत मदन लजावेजी ॥
मुख मृदुहँसनि लसत पट पीरो निरखि नैन सुख पावेजी ॥१॥
भोजन लै हरि आगे राखे धनि धनि भाग्य उचारीजी ॥
वचनन करि तिनको सनमानी अति हित कर बनवारीजी ॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई गृह पति तजि कहा धारीजी ॥

कहियत विप्र वेद अधिकारी हो तुम तिनकी नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—यज्ञ करत वे वनहिंमें, तुम बिन यज्ञ न होय ॥
पति आयसु मान्यो नहीं, भलो कियो नाहिं कोय ॥
चौ०-भलो कियो नाहिं कोय पतिनकी आयसु तुमहिं मिटाईजी
पतिको प्रभु करि जो तिय माने चार पदारथ पाईजी ॥
पतिहि देवता कहिये तिनको वेद कहत यह गाईजी ॥
जाहु सकल अब निज निज पति ढिग समुझि लेहु मनमाईजी॥
कर्म धर्म हम जानत नाहीं सुनहु श्याम अभिरामाजी ॥
द्विजतिय परम सुजान जोरकर बोलीं वचन ललामाजी ॥
तुमहीं सकल जगतके स्वामी अंतर्यामी नामाजी ॥
यज्ञपुरष तुमहीं सुखधामा तुमहीं पूरण कामाजी ॥ २ ॥
दोहा—तुमको ध्यावै यज्ञ करि, चार पदारथ पाइ ॥
सकल धर्म मय शरण यह, जीवनको सुखदाइ ॥
चौबोला-जीवनको सुखदाइ यहै हम पतियन मुख सुनपाईजी ॥
कहत वेद इतिहास बखानी शारद नारद गाईजी ॥
यह दूषण नाहिं हमें गुसाँई ताते शरणों आईजी ॥
तुम माया वश पती भुलाने पहिचाने प्रभु नाईजी ॥ १ ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजे यह हरि अरज हमारीजी ॥
हमको शरण आपनी लीजे हम सब दासि तिहारीजी ॥
अपने चरण शरण रख लीजे अब जिन राखो न्यारीजी ॥
सुनि प्रभु द्विजपत्निनकी बानी हरषे मन बनवारीजी ॥
दोहा—धन्य धन्य हित करि कह्यो, भोजन लीनो कान्ह ॥
दे अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हें कह्यो घर जान ॥
चौबोला—तिन्हें कह्यो घर जान सबनको बिदा करी जगनाथाजी॥
ह्वैहें शुद्ध तुम्हारे स्वामी चलीं सकल मिल साथाजी ॥

पाय भक्ति वरदान चलीं घर हरि आयसु धरि माथाजी ॥
चलीं हर्षि तिय सदन मगन मन राखि हृदय ब्रजनाथाजी ॥
नँद नंदनकी करत बड़ाई द्विजपत्नी घर आईजी ॥
देखत तिन्हें विप्र समुदाई शुद्ध विमल मति पाईजी ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी आपन धृक बताईजी ॥
जिनके हेत यज्ञ हम कीनो भोजन दीनो नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हम विद्या अभिमानकर, अविगति गति किम पाय ॥
पारब्रह्म प्रभु दीनहित, जन हित प्रगटे आय ॥

चौबोला—जनहित प्रगटे आय हरीको हम पहिचाने नाईजी ॥
बार बार धृक धृक है मोको कहत सकल मनमाईजी ॥
हैं यह तिय अतिशय बड़भागी जिनको ध्यान कन्हाईजी ॥
ब्रह्मादिक खोजतहैं जाई ताइ देखि यह आईजी ॥ १ ॥
ऐसे बहु विध तियन सराई पुनि पुनि बारम्बाराजी ॥
आदर कर लीनी घर माहीं अति आनँद द्विज साराजी ॥
प्रेम प्रीति कर जो हरि ध्यावे सो उतरे भवपाराजी ॥
नर नारी कछु नाहिं बिचारा प्रभुको प्रेमहिं प्याराजी ॥ २ ॥

दोहा—भावतियन को धारि उर, तब हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचिसोंप्रीतिसमेत॥

चौबोला—रुचिसोंप्रीति समेत जेवतसब सो छबिबरनिनजावैजी॥
करत परस्पर हासविलासा छीन छीन हरिखावैजी ॥
अति रुचि भोजन कियो कन्हाई सखा वृन्द सुख पावेजी ॥
वनमें फिरत चरावत गैंया कबहुँक इत उत धावेजी ॥ १ ॥
भये सखा सगरे इकठौरी चरत वनहिंमें गाईजी ॥
दुपहर घाम जान मनमाई देखि सघन घन छाईजी ॥
बैठे ग्वाल बाल चहुँ ओरियां सो छबि बरणि न जाईजी ॥

मध्य श्याम सुन्दर सुखदाई जिमि शशि उडुगण माईजी ॥२॥
दोहा—मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली वनमाल ॥
कोटि काम लज्जित निरखि, सुन्दर घन नँदलाल ॥
चौबोला—सुन्दर घन नँदलाल कबहुँ हरि मुरली मधुर बजावेजी
कबहुँ सखन संग सारंग गावें नाना भाव बतावेजी ॥
कोऊ ताल बजावत नीके आनँद उर न समावेजी ॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं ततकारी कोउ लावेजी ॥ १ ॥
मगन देख सुरवृन्द करत हरि केल सो बनहिं कन्हाईजी ॥
कहत धन्य ये ब्रजके बासी विहरत जहँ सुखदाईजी ॥
धनि वृन्दावन चन्द्र धन्य यह बिटप भूमि छबि छाईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज कहि सुर रीझत हर्षि सुमन झरि लाईजी ॥२॥
दोहा—वन विहार हरिको निरखि, मनमन देख सिहाहिं ॥
हम न भये द्रुम लता तृण, श्री वृन्दावन माहिं ॥
चौबोला—श्री वृन्दावनमाहिंखेलतहरितहाँ सबसखाबुलायेजी ॥
खेलहिमें सब रहे भुलाई निकसगईं कितगायेजी ॥
गैयांकितहिचरत को जाने यह सुनि खेलभुलायेजी ॥
जित तित हेरनको सब धाये ले गैयां सब आयेजी ॥ १ ॥
जेसुरभी आईं नाहिं जानी चरत सघन वनमाईजी ॥
तिनको तरुचढि कान्ह बुलाई मुरली टेर सुनाईजी ॥
ऐसी गैयां श्याम सधाई मुरली सुनि सब आईजी ॥
जब जब गैंयन श्याम बुलाई हूंहूं करि सब धाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तिनपर कर फेरत हरी, ले पट झारि गुपाल ॥
करत प्यार तिनसों, अती हस्तकमलप्रतिपाल ॥
चौबोला—हस्त कमल प्रतिपाल हरीको निरखि गायसुखपावेजी

१ नक्षत्र। २ आनंद। ३ वृक्ष। ४ देवता।

तिनके भाग्य कहत नाहिं आवै लखि सुरधेनु सिहावैंजी ॥
जब हरि गैयन करसों परसे कामधेनु तरसावैंजी ॥
कामधेनु यह कहत काहु विधि हमहुँ जन्म ब्रजपावैंजी ॥ १ ॥
चारत त्रिभुवन नाथ जिनहिंको धनि धनि ब्रजकी गाईजी ॥
झारत पोंछत दुहत नितहिनित अपने हाथ कन्हाईजी ॥
कामधेनु ब्रजधेनु लखतही मनहीं मन पछिताईजी ॥
हरि कर पंकज हमहुँ परसती हम न भई ब्रजमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नानाविधि लीला करत, बनमें ललित कन्हाइ ॥
वृन्दावन बीत्यो दिवस, भई सांझ नियराइ ॥

चौबोला—भई सांझ नियराइ चलहु घर सबसों कहत कन्हैयाजी॥
गाय घेर आगे करलेहू चलहु वेग अब भैयाजी ॥
चलहू वेग विलंब न लावो भयो अब सांझ समैयाजी ॥
भली कही यह बात कहत सब आगे करलइ गैयाजी ॥ १ ॥
बनते निकरि चले सब ग्वाला आए ब्रजहिं कन्हाईजी ॥
सुरभी वृन्द गोप बालक सँग अति आनँद मनमाईजी ॥
अधर अनूप मुरलि सुर गावे गौरी राग बजाईजी ॥
सुनत श्रवण ब्रज सुंदरि धाई गृहकारज विसराईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति परस्पर सकल मिल, वे आवत नँदलाल ॥
देखि सुभग छवि श्यामकी, मगन भई ब्रजबाल ॥

चौ०-मगन भई ब्रज बाल पूरण शशि उदित श्याम छविछाईजी
कुमुदिनसर फूलीं ब्रजबनिता आनँद उर न समाईजी ॥
नैन चकोर रहे टकलाई विरहकी ताप मिटाईजी ॥
कहति सकल ब्रजबाम प्रेममय अति आनँद मनमाईजी ॥१॥
देखहु सखि यशुमति सुतसोभा छवि अनूप सुखदाईजी ॥
श्यामलतनु पटपीत सुहायो मोर मुकुट छवि छाईजी ॥

कुंडल ललित सुभगकर मुरली उर बन माल सुहाईजी ॥
भ्रुकुटी बिकट नैनरतनारे सो छबिबरनि न जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गोपदरज छबि छावही, नटवरभेष सुहाय ॥
एक कहति देखहुसखी, लेतहै मनहिं चुराय ॥
चौबोला–लेत है मनहिं चुराय सुनतही सखी सकलहरषाईजी॥
निरखत हरि मुख छबि सुखपाई आनँद उर नसमाईजी ॥
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई सखावृन्द समुदाईजी ॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारत जन हितजन सुखदाईजी ॥ १ ॥
कहत परस्पर युवति सयानी धनि धनि सखि यह मोरेजी ॥
कियो मुकुट जिनकी पांखनको नटवर नंदकिसोरेजी ॥
धनि धनि सखि यह बांस जासुकी बजनमुरलि घनघोरेजी ॥
हरि पूरत निजसांस ताहि मधि को पुनीत अब औरेजी ॥ २ ॥
दोहा–गये सदन निज निज सखा, घर आये दोउभाइ ॥
देखि मगन भेउ मात मन, लीन्हें कंठलगाइ ॥
चौबोला–लीन्हे कंठ लगाय काहेहरि आज अवार लगाईजी ॥
यह कहि बारबार बलिजावत मगन यशोमति माईजी ॥
रोहिणिसों कह्यो यशुमति माई भूखे हैं दोउभाईजी ॥
तुम भोजनकी करहु तयारी मैं दोउ देत न्हवाईजी ॥ १ ॥
निकट लिये मुरली करलीनी धरी लकुट बनवारीजी ॥
नीलांबर पीतांबर लीने दीनो मुकुट मुरारीजी ॥
प्राण समान यशोमति जानी राखे सदन समारीजी ॥
छोरति अंग भूषण महतारी मुक्तामाल उतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कटि किंकिन भुज बन्द भुज, छोरति निरखत गात ॥
अति प्रसन्न यशुमति महर, आनँद उर न समात ॥
चौबोला–आनँद उर न समात दोउनके झारति अंग उर लाईजी

और नकोऊ टहल करैया तुम चेरे दोउ भाईजी ॥
जब तुम रहे लाल अति नन्हा तब मैं लियो बसाईजी ॥
सुनि हँसि हँसि हरि बलिसों बोले झूंठ कहत यह माईजी ॥ १ ॥
सांच झूंठकी बातरी मैया यह तो जानिनजाईजी ॥
मैं चेरी हँसि हँसि कहति तब यशुमति लेत बलाईजी ॥
सुमनासुत अंगन परसायो उष्णशीत जल ल्याईजी ॥
प्रेम प्रीति दोउ सुतहि न्हवाये पोंछति अंग सुख पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–षटरस व्यंजन सरस ले, दीने मातजिमाइ ॥
अति रुचि सों भोजन कियो, राम श्याम दोउ भाइ॥

चौबोला–राम श्याम दोउभाइ दुहुँनहित झारी भरिले आईजी॥
अचवन करि मुखधोय उठे तब रोहिणि बीरा ल्याईजी ॥
बीराखाय मुदित दोउभाई विहारन लेत बलाईजी ॥
यशुमतिके सुख कौन गिनावे शारद सकहि न गाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य धनि यशुमति माई महिमा कहत न आवैजी ॥
ब्रह्म सनातन है प्रभु जोई सोई पुत्र कहावेजी ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी विधि हर पार न पावैजी ॥
विश्वंभर निजनाम ताहिको यशुमति गोद खिलावैजी ॥ २ ॥

अथ गोवर्धन लीला ॥

दोहा–रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठोयाम ॥
महरि महरके प्राण धन, मोहन सुन्दर श्याम ॥

चौबोला–मोहन सुन्दर श्याम यशोमति हरिक्षण विसरत नाईजी
निशि दिन जात न जानति नाहीं मगन प्रेम मन माईजी ॥
देव पितर सब काल भुलाने रहत सकल सुख पाईजी ॥
कातिक सुदि परवा जब होई पूजत इंद्र सदाईजी ॥ १ ॥

ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई सबके ध्यान कन्हाईजी ॥
सो तिथि अति समीप जब आई यशुमति मन परखाईजी ॥
कहत नंद सों नँदकीरानी सुरपति भेट भुलाईजी ॥
जाकी कृपा बसत ब्रज माई कमी कछूकी नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—दूध दही माखन मही, सकल वस्तु घरमाइ ॥
सहस मथानी मथतानित, नौलख दूधतगाइ ॥

चौबोला—नौलख दूधतगाइ उनहिंकी कृपा नवो निधि पाईजी ॥
जिनकी कृपा पुत्र हम पाये दीने विघ्न नशाईजी ॥
भई सकल[1] ब्रज मांझ बडाई कुशल रहो दोउ भाईजी ॥
गोप गाय ब्रजके रखवारे सुरपति[2] देव सदाईजी ॥ १ ॥
तिनकी तुम सब सुरत भुलाने दिवस[3] पाँच रहे आईजी ॥
इंद्र यज्ञकी करहु चडाई गोपन लेहु बुलाईजी ॥
कहत महरि सों नंद सुरत तुम भलि यह मोहिं दिवाईजी ॥
भूलि गये हम इंद्रदेवको काज मोह वश माईजी ॥ २ ॥

दोहा—विनय करत सुररायसों, हाथ जोर नँदराय ॥
क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु, तुमको गयो भुलाय ॥

चौबोला—तुमको गयो भुलाय कहत नँद सब उपनंद बुलायेजी
श्री वृषभानु सहित सब आये सुनत तुरत उठधायेजी ॥
महर महर मिल शीश नवाये देखि नंद सुख पायेजी ॥
अति आदर सबहिनको कीनो सादर सब बैठायेजी ॥ १ ॥
कंस कछू मांग्यो तो नाहीं आपुसमें बतरायेजी ॥
राज अंश उनको जो होई विन मांगे दे आयेजी ॥
बूझत नंदहि सब सकुचाये कौने काज बुलायेजी ॥
मैं तुमको इहि काज बुलाये नंद सबन. समुझायेजी ॥ २ ॥

---

१ सब। २ इन्द्र। ३ उदिन।

दोहा—सुरपति पूजाके दिवस, पहुँचे समिपहि आय ॥
मैं भूल्यो नृपकाजमें, तुमहूं गये भुलाय ॥
चौबोला—तुमहूं गये भुलाय रह्यो मैं राज काज लपटाईजी ॥
निशि दिन लोभहि मांझ भुलान्यो मोहिं सुरत नाहिं आईजी ॥
इंद्र यज्ञकी सुरत भुलाई दिन समीप गये आईजी ॥
ताते अब सब करहु चडाई इंद्र यज्ञ सुखदाईजी ॥ १ ॥
सुरपतिको हम सदा मनावें तिनकी सुरत भुलाईजी ॥
देवकाजजिय जानि गोप सब रहे सकल हरषाईजी ॥
हम सब भूले सुरपति पूजा यों कहि रहे पछिताईजी ॥
कहत नंद सों सकल गोप मिल भलि यह सुरत दिवाईजी॥२॥
दोहा—क्षमा करावत पाप सब, सुरपतिको शिरनाय ॥
गये गोप निज निज सदन, अति मन हरष बढ़ाय ॥
चौबोला—अति मन हरष वढाय पूजा विध करनलगे सबजाईजी
जिहिं जिहिं भांति सदा चल आई विधिवश सोंजसजाईजी ॥
अमित भांति पकवान मिठाईं करत घरन घर माईजी ॥
नंद महर घर बजत बधाई गावति नारि सुहाईजी ॥ १ ॥
नेवज करत यशोदा रानी आठो सिद्ध मँगाईजी ॥
वेसन मैदाके पकवाना करत धरत विधि लाईजी ॥
घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण मिश्रीपाक बनाईजी ॥
विविध भांति पकवान मिठाई नाम कहे नाहिं जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—और नारि ब्रजकी सबै, घृत पकवान बनाहि ॥
चढीं कढाई जहँ तहां, यशुमति जात सिराहि ॥
चौ०—यशुमति जात सिराहि मांगति जो रोहिणि सो पहुँचावैजी
महरि सबनकी ओर निहारै पृथक पृथक रखवावैजी ॥
सैंति सैंति अति नेम प्रेम सों धरत अछूतेजावेजी ॥

श्याम कहूं परसे नहिं भोजन यों मन माहिं डरावैजी ॥ १ ॥
सुरपतिं पूजा जानि जीयमें शंक करत मन माईजी ॥
सब देवनको देव हरी सो यशुमति जानति नाईजी ॥
खेलत ते संतन सुखदाई आये सदन कन्हाईजी ॥
जननी कहति यहां जनि आवो लरकन देव डराईजी ॥ २ ॥

दोहा—आंगनही ठाढे रहे, मन मन हँसत कन्हाइ ॥
मैया ऐसो देवको, इतनो भोजन खाइ ॥

इतनो भोजन खाय सुनतही खीज कहतहै माईजी ॥
ऐसी बात न कहो कन्हाई खेलहु बाहिर जाईजी ॥
बालकको अपराध क्षमावै पुनि पुनि देव मनाईजी ॥
युवति कहत हरिचले रिसाई गये श्याम अनखाईजी ॥ १ ॥
देव काज कहा जाने मोहन जानदेहु कहां जावैजी ॥
छूहै कहूँ श्याम यह भोजन जिन कहुँ इंद्र रिसावैजी ॥
और नहीं हम काउअ जाने इंद्रहि सदामनावैजी ॥
राम श्यामको कुशल राखियो इंद्रहि विनय सुनावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कृपा करो सुरराय तुम, तुम सम देव न आन ॥
ऐसे सुरपति यज्ञ हित, यशुमति करत विधान ॥

चौबोला—यशुमति करत विधान गये हरि जहां बैठे नँदराईजी ॥
ब्रजके जे उपनंद तहां सब जुरे नंद ढिग आईजी ॥
करत बात विधि इंद्र यज्ञकी बैठे अति सुखपाईजी ॥
पुहुप माल मंडली विराजत दीपमाल सजवाईजी ॥ १ ॥
ढोल निसान बाजने बाजे मुदित ग्वाल समुदाईजी ॥
आभूषण पहराय गोप सब चित्र विचित्र बनाईजी ॥
सात बरषके कुँवर कन्हाई खेलत ग्वालन माईजी ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं गावत मंगल बधाईजी ॥ २ ॥

दोहा-सथिया रचि पुनि थापकर, पूजा करत विधान ॥
पूजा देखी श्याम तब, हँसे देखिके कान्ह ॥
चौबोला-हँसे देखिकै कान्ह मोआगे सुरपति पूजा ठानेजी ॥
मोते और देवको दूजा वह मोको नहिं जानेजी ॥
ब्रजबासी मोको नहिं जाने सुरपतिको यह मानैजी ॥
अब यह मेटों यज्ञ बिहाने लियो बहुत दिन यानेजी ॥ १ ॥
ब्रजबासिनपै आप पुजाऊं नाम धरों गिरिरायेजी ॥
गये नंद ढिग कुँवर कन्हाई यह विचार ठहरायेजी ॥
हरषि नंद कनियां बैठाये बदन चूम उर लायेजी ॥
तब हरि बोले नंद महरसों मधुर मंद मुसकायेजी ॥ २ ॥
दोहा-करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
काहेको पूजत सबै, कौन देव सो जाय ॥
चौबोला-कौन देव सो जाय बतावो मैं नाहिं जानत बाईजी ॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई इंद्र सबनके राईजी ॥
तिनको पूजत गोप सदाई कुलमें रीति चलाईजी ॥
ताते तिन्हें पूजिये मोहन कुशल रहो दोउ भाईजी ॥ १ ॥
या पूजाते जल वे बरसत हो प्रसन्न सुरराईजी ॥
तृण अनाज उपजतहै जाते गाय गोप सुखदाईजी ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजे सुखी रहत सब गाईजी ॥
तब हरि कह्यो सुनहु नँद ताता तुम यह बात सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जहां इन्द्र पूजत नहीं, तहँ बरसत किम जाय ॥
सुने वचन नंद श्यामके, उत्तर देत न आय ॥
चौबोला-उत्तर देत न आय हरी जब ऐसी बात सुनाईजी ॥
मनहिं कहत अति चतुर कन्हाई इतनी बुधिं कहां पाईजी ॥
देवकाज कहा जाने नन्हा है अति बाल कन्हाईजी ॥

जाहु सदन अब वेग श्याम तुम हरषि कह्यो नँदराईजी ॥ १ ॥
ऐसे में जिन जाहु कहूं तुम भीर बड़ीहै लालैजी ॥
कितधौं आवत जात कोउ कहुँ फिरत गोप गण ग्वालैजी ॥
मेरे पलकापर तुम जावो सोयें रहो गोपालैजी ॥
पाछेतेही निकट तुम्हारे आवत मैं अब हालैजी ॥ २ ॥

दोहा—तब हरि मन इक बुद्धि करि, और गोप ढिग जाय ॥
तिन्हें कह्यो समुझाययों, मोहिं निशि सपनो आय ॥

चौ०-मोहिं निशि सपनो आय पुरुष इक अति पुनीत सुखदाईजी
चार भुजा तनु सुभग शृँगारू देहैं दरश दिखाईजी ॥
इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई मोहिं कह्यो समुझाईजी ॥
गिरि गोवर्धन प्रगट दिखाऊं पूजहु तिनको जाईजी ॥ १ ॥
तुम आगे भोजन सब खैहै अपनो रूप दिखाईजी ॥
चार पदारथके ये दाता अन धन कौन चलाईजी ॥
ऐसे देव छांडि घरमाई पूजत इन्द्र वृथाईजी ॥
कोटि इन्द्र ये क्षणमें मारें क्षणहीं कोटि उपाईजी ॥ २ ॥

दोहा—गोबर्धन सम दूसरो, और न कोऊ देव ॥
मोमनहूं ये आवहीं, करहु गिरीकी सेव ॥

चौबोला—करहु गिरीकी सेव गोवर्धनहैं सब सुखके दाताजी ॥
चाकित गोप हरि वचन सुनतहीं कहत अकथ यह बाताजी ॥
सुने न अबलों देव कहूं हम प्रगटहोयके खाताजी ॥
सोचत सब उपनंद नन्दमिल सुनि अचरजकी बाताजी ॥
कहा कहत नँदलाल सुपनकी बात समुझि नाहिं जाईजी ॥
सुनि यह बात सवन ब्रजपाई देख्यो सुपन कन्हाईजी ॥
सुरपति पूजादेत मिटाई गिरिकी करत बडाईजी ॥
कोऊ कहत कान्ह कह सांची कोउक सांच न आईजी ॥

दोहा—कोउ कहत बालक हरी, जानें कहा पुजाय ॥
कोउइन्द्रकोउकहत कछु, बातसमुझिनाहिं जाय ॥
चौबोला—बात समुझि नहिं जाय कहत बलि[1]गोपनसोंसमुझाईजी
को महिमा जाने अविनाशी हरि जनके सुखदाईजी ॥
इनको तुम बालक मति जानो करो सो कहत कन्हाईजी ॥
नंद निकट जे गोप सयाने कहत सकल हरषाईजी ॥ १ ॥
कीजै सोई कहत कन्हाई यों नंदको समुझावैजी ॥
मेरेहू मनमें यह आवै यों नँद सबन सुनावैजी ॥
मोहिं भरोसो है यह हरिको स्वप्नझूंठनाहिं जावैजी ॥
कालीको सुपनो हरि देख्यो तबते सांचहि आवैजी ॥ २ ॥
दोहा—ताते जोई कीजिये, कान्ह कहत सोइ बात ॥
सब ब्रजवासी पूजिये, गोवर्धन चल प्रात ॥
चौबोला—गोवर्धन चल प्रात पूजिये यहै बात ठहराईजी ॥
कौन भांति गिरि[2] पूजन कीजै कहो कान्ह समुझाईजी ॥
हर्षि श्याम यों कहत सबनसों जो तुम सोंज बनाईजी ॥
सब व्यंजन पकवान मिठाई शकट[3]न लेहुभराईजी ॥ १ ॥
नाचत गावत सहित हुलासा चलहु सकल गिरिराईजी ॥
तहाँ जाय गिरिवरहि मनावो पूजहु भोगलगाईजी ॥
मुँहमांगे तुमको फलदेहै भोजन लेहैं खाईजी ॥
मेरो कह्यो सत्य तुम मानो स्वप्न न जात वृथाईजी ॥ २ ॥
दोहा—देखहु परच्यो निजनयन, तब मोहिं सांच बताय ॥
जो चाहो ब्रजकोभलो, तो पूजो गिरिराय ॥
चौबोला—तो पूजो गिरिराय श्याम यों दीनों सबनसुनाईजी ॥
सबहिन बात मानसोइ लीनी भये सुखी मन माईजी ॥

---

१ बलराम। २ पर्वत। ३ गाड़न।

कहत सकल मिल अति हरषाई चलहु श्याम गिरिराईजी ॥
करत गोपगण परम हुलासा घर घर आनँदबधाईजी ॥ १ ॥
मिलत परस्पर अंकमलाई शकट सोंजसजदीनेजी ॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई अमित भांतिके कीनेजी ॥
रस गोरस मेवा विधि नाना मधुर सुमिष्ट नवीनेजी ॥
षटरस व्यंजन किये यज्ञहित सो सबहिन सजलीनेजी ॥ २ ॥

दोहा–कछु शकटन कछु काँवरन, षटरसके सब भोग ॥
लेले गिरि पूजनचले, गृह गृहते ब्रजलोग ॥

चौबोला-गृह गृहते ब्रजलोग चले सब आनँद उर न समावैजी ॥
नंदमहरकें घरकी सामा नाम कहत नाहिं आवैजी ॥
सहस शकट पकवान मिठाई गोरस भार भरावैजी ॥
नंद सदन ते ले सबग्वाला गोवर्धन को जावैजी ॥ १ ॥
नाना विधि पटभूषण साजे ब्रजगोपन समुदाईजी ॥
नंद महर उपनंद जितेका चलेहर्षि गिरिराईजी ॥
सुभग शृँगार किये दोउ भाई बलि अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
सखा वृन्द सोहत सँग सुन्दर निरखत मदन लजाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

पूजन सब गिरिको चले गोप मन हरषित आनँद भारी ॥
सामा सब लई सजाय सबन निज निज धरि कंचन थारी ॥
लिये चन्दन धूप सुगंध सुमन अक्षत अरु पान सुपारी ॥
दीपक विधि लई सजायधरी सुन्दर निर्मल जलझारीजी ॥
ऐसे सब सोंज सजाई, रोहिणि अरु यशुमति माई,
अरु ब्रजकी नारि बुलाई ॥ सबमनमें अति आनंद चली शुभगा
वति मंगल चारी ॥ पूजन० ॥ १ ॥

वृषभानुपुराले आदि सकल ब्रजके सब लोग लुगाई ॥
श्री राधा भानु कुँवारि संग सखियनकी भीर सुहाई ॥
पट भूषण नाना रंगकिये नवसत शृंगार बनाई ॥
कीरति रानीके संग नारि सब यूथ यूथ मिल आई ॥
सबके मनमेंयहआई, देखेंगी कुँवर कन्हाई, मनमें रहेश्यामसमाई॥
कब देखें शीघ्रहि जाय सबन मन लगी प्रीति अति भारी ॥
पूजन० ॥ २ ॥

सब परम मुदित ब्रजवाम बसे मन श्रीनटवरबनवारी ॥
यों कहत मनहिंमन माहिं देखि हैं हरि छबि आनँदकारी ॥
मुखचन्द्र छवी मृगनैन सुघर बोलत कोकिल समसारी ॥
नवयौवनमें भरपूररहीं छकि सब ब्रज गोपकुमारी ॥
सबके मनमोहन भावैं, चलिगोवर्धनको जावैं, भई भीर मगहु नहिं पावैं ॥ चली जात हरषाय मगनमन भरी प्रेमरसनारी ॥ पूजन० ॥ ३ ॥

सब सखा वृन्द ले साथ जात गोवर्धन कुँवर कन्हाई ॥
सब करत केलि मगमाहिं गोप गण ताल मृदंग बजाई ॥
नाचत कोउ गावत जात भीरते मारग पावत नाई ॥
कोउ शकटन सोंजसमार एकको एकहिं लेत बुलाई ॥
सब ब्रजकी गोप कुमारी, भरीं प्रेम मगन रससारी, निरखत छबि कुंज बिहारी॥सुनत न कोऊ बात परस्पर होत कुलाहल भारी॥
पूजन सब गिरिको चले, गोप मन हरषित आनँदभारी ॥ ४ ॥

दोहा–सबको मन हरिमें बस्यो, गोवर्धन मग जात ॥
देखत कौतुक श्यामके, आनँद उर न समात ॥

चौबोला-आनँद उर न समात गोपगण हरिको देखि सिहावेजी ॥
ब्रज बासिनकी भीर सुहाई उपमा कहत न आवेजी ॥

नन्द महर उपनन्द सकल अरु राम श्याम दोउ जावेजी ॥
पहुँचे सब गोवर्धन जाई निरखि शिखर सुख पावेजी ॥ १ ॥
उतरे सहित समाज चहूंदिश ब्रजवासी समुदाईजी ॥
सोभित मध्य गिरी गोवर्धन सो छबि परम सुहाईजी ॥
चहुँ दिश फेरकोस चौरासी घेर लिये गिरिराईजी ॥
लगे चहूं दिश चारु बजारा अति छबि कहत न आईजी ॥ २ ॥

दोहा—वस्तु वरणि नहिं जावही, बिनहीं मोलबिकात ॥
गावहिं मंगल युवति सब, नटवा नाच दिखात ॥

चौबोला—नटवानाच दिखात देख सब रहे गोप हरषाईजी ॥
भये प्रसन्न देखि गिरिराई आनँद उरन समाईजी ॥
बूझत पूजन विधि नँदराई कहहू कुँवर कन्हाईजी ॥
यज्ञ आरंभ करहु हरि बोले लीजे विप्र बुलाईजी ॥ १ ॥
पूछ वेद विधि तिनसों लीजे पूजहु सब गिरिराईजी ॥
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये लिय आदर बैठाईजी ॥
यज्ञ आरंभ कियो तब विप्रन हरिकी आयसु पाईजी ॥
परम रुचिर वेदिका बनाई साम वेद ध्वनि गाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखनको धाये सबै, ब्रजके जेनर बाम ॥
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावत श्याम ॥

चौबोला-ताहि पुजावत श्याम गोप सब देखि हृदय हरषावेजी ॥
करत जोइ नँदलाल करत सो देखि देखि मन लावेजी ॥
पंचामृत बहु कलस भराये गिरिको शिखर न्हवावेजी ॥
बहुरो ले गंगाजल डारयो चंदन तिलक चढावेजी ॥ १ ॥
भूषण वसन विचित्र चढाये सुमन माल पहराईजी ॥
धूपदीप करि आरति साजी झालर घंट बजाईजी ॥
करत वेद ध्वनि विप्र सुहाये देखत सुर समुदाईजी ॥

सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई थाप्यो ब्रज गिरिराईजी ॥ २ ॥

दोहा–देखि इन्द्र मन गर्व करि, गोपनपर रिसहाय ॥
पूजत गिरि मोहिं तजि यह, देहों गिरिहिबहाय ॥

चौबोला–देहों गिरिहिं बहाय गोप सब ब्रजकोउ रहन न पाईजी
देखो तब को करत सहाई यह विचार ठहराईजी ॥
देखी मैं सब इनकी करनी मरन काल बुधि आईजी ॥
सुपनेको सुख लेत मनाई पूजत गिरि मनलाईजी ॥ १ ॥
श्याम कह्यो तब नन्द महरसों भोजन लेहु मँगाईजी ॥
गिरि आगे सब राखहु ल्याई अर्पहु विनय सुनाईजी ॥
ल्यावहु भोजन गिरिके आगे कहत सबन नँदराईजी ॥
सामग्री जोहती भोगकी लीनी सब रखवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–विविध मिठाई पाक सब, अमित भांति पकवान ॥
षटरसके व्यंजन बहुत, नाना भांति संधान ॥

चौबोला-नाना भांति संधान मेवा मधु बहु प्रकारकी त्यारीजी॥
सुन्दर सरस[1] एकते एका मधुर मिष्ट रुचिकारीजी ॥
खीर आदि बहु भांति रसोई भर धरि कंचन[2] थारीजी ॥
मूंग भात अरु बरा पकौरी कोरी दधिकी न्यारीजी ॥ १ ॥
कियो अन्नको कोट सुहावन ऐसोइ गिरी सुहावेजी ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत जिहिं विधि श्याम बतावेजी ॥
जिमि पूजत गिरि कुँवर कन्हाई तिमि सब पूजत जावेजी ॥
गिरि गोवर्धनके चहुँ ओरी अन्न कोट छबि छावेजी ॥ २ ॥

दोहा–ठौर ठौर वेदी रची, अन्न कोट चहुँपास ॥
तिन मधि गोवर्धन गिरी, राजैत[3] अति शुभरास ॥

चौबोला–राजत अति शुभरास अनूँपम[4] गिरिछबि परमसुहाईजी

१ श्रेष्ठ। २ सोना। ३ सोभित। ४ जिसकी उपमा नहीं।

सुन्दर रूप मनोहर मानहु खान छवीकी आईजी ॥
गिरि गोवर्धन राय सुभगकी छवि बरनी नहिं जाईजी ॥
बिहारन जनकोलखत सुहावन ध्यान परम सुखदाईजी ॥ १ ॥
महिमा अमित अपार गिरीकी को कवि बरन बतावैजी ॥
जिहिं पूजत करतार ब्रह्म शिव शारद पार न पावैजी ॥
तीनयामदिन गयो प्रातते गोपन भोग सजावैजी ॥
कहत नंद हँसि श्याम सुन्दर सों कहहु गिरिः अब खावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत सबन समुझाय हरि, अर्पहु घंट बजाय ॥
दीन वचन मुखते कहो, मनकी खुटक मिटाय ॥

चौबोला—मनकी खुटक मिटाय मूंद दृग रहो ध्यान मन लाईजी
प्रेम सहित कर जोर मनावो विनवहु सब गिरिराईजी ॥
हरि गोपन पूजा सिखरावे आपुन आप पुजाईजी ॥
जिनपर कृपा करत मनमोहन तिनपर टहल कराईजी ॥ १ ॥
हरिको कह्यो मान सब लीनो बहुविधि गिरिहि मनायोजी ॥
तब प्रगटे गोवर्धन नाथा यज्ञ पुरुष श्रुति गायोजी ॥
सहसभुजातनु श्याम तमाला मोर मुकुट छवि छायोजी ॥
नख शिख भूषण परम अनूपम अंग अंग दरशायोजी ॥

दोहा—देखि कहत ब्रजलोग सब, दियो दरश गिरिराय ॥
जै जै जै कहि सुर सकल, हर्षि सुमन झरिलाय ॥

चौबोला—हर्षि सुमनझरि लाय गोप गण देखि२सुखपावैजी ॥
सहसों भुजा पसारि गिरीसो सबको भोजन खावैजी ॥
देखत ब्रजकी नारि मगन मन हरि चरित्र मनभावैजी ॥
कहत मुदित सबलोग लुगाई हरि सम गिरिहिसुहावैजी ॥ १ ॥
जैसे कान्ह श्यामतनु सोहै तैसेही गिरिराईजी ॥
तैसेइ कुंडल तैसी माला तैसी दृग चपलाईजी ॥

तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो नखशिख रूप कन्हाईजी ॥
द्वैभुजहरिके सोभित गिरिके सहस भुजा अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–देखि दरश गिरिरायके, यशुमति अरु नँदराय ॥
बड़ो देव हमको मिल्यो, दियो दरश निज आय ॥
चौबोला–दियो दरशनिज आय ऐसो कहूं देखनमें नहिं आवैजी
जीवन जन्म सफल कर लेख्यो मनहीं मन हरषावैजी ॥
ललिता राधेहि यों समुझावै मोहिं यह बात लखावैजी ॥
यह लीला सब श्याम बनावै जेवत आप जिमावैजी ॥ १ ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई इन्द्रमेट बलिखावैजी ॥
मेरी बात मानतू राधा इनके गुणको पावैजी ॥
इतहि नन्दको करगहिराजत गोपन सों बतरावैजी ॥
उत आपहि धरि सहस भुजा हरि रुचि रुचि भोगलगावैजी॥२॥
दोहा–मुदित विलोकत श्याम छवि, श्रीराधा सुखपाय ॥
नितनव करत विनोद ब्रज, भक्तनके सुखदाय ॥
चौबोला–भक्तनके सुखदाय इतहिं हरि गोपन सों बतरायोजी ॥
उत सबहिंनको भोजन खायो रुचि करि भोग लगायोजी ॥
ग्वालिन एक बिलोवनहारी भान सदन रखि आयोजी ॥
जासुनाम बदरीला तानें घर ते भोग लगायोजी ॥ १ ॥
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई अन्तर्यामि कन्हाईजी ॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी लीनो भुजहिं बढ़ाईजी ॥
भोजन करत परम रुचि मानी यह लीला ठहराईजी ॥
कहत नंद सो कुँवर कन्हाई मैं जो कही सोइ आईजी ॥ २ ॥
दोहा–देखी मेरी सांच तुम, जाने अब गिरिराय ॥
खायो भोजन सबहिंको, दियो दरश निज आय ॥
चौबोला–दियो दरश निज आय तुम्हारी भक्ति भावमन भाईजी

इन तुमरी पूजा सब मानी भये प्रसन्न गिरि राईजी ॥
अब तुम मांग्यो चाहो जोई मांगिलेहु सो चाईजी ॥
नन्द कहत तुम धन्य श्याम यह पूजा हमहिं बताईजी ॥ १ ॥
प्रीति रीत मन जान सबहिंको लीनो भोजन खाईजी ॥
तब बोले गिरिराय नंद सों है प्रसन्नन मन माईजी ॥
लेहु नंद वरदान तुम्हारे मन वांछित जो चाईजी ॥
बहुत करी तुम भक्ति हमारी सो मेरे मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम समान[1] सेवक नहीं, पूज्यो मोहिं मनलाय ॥
इन्हें कुशल राखो सदा, राम श्याम दोउ भाय ॥

चौबोला—राम श्याम दोउ भाइ दोउनकी मैंहों सदा सहाईजी ॥
मैंहीं इनको सुपन दिखायो सुरपति भेट मिटाईजी ॥
अब जो तुमपर इन्द्र रिसावै जल बरसै ब्रज आईजी ॥
कान्ह कहै सोई तुम करियो डरियो जिन मनमाईजी ॥ १ ॥
अब तुम मम[2] प्रसादले खावो करहु बास घर जाईजी ॥
और कछू भय मन जिन ल्यावो ब्रजमें बसहु सदाईजी ॥
यह सुनि चाकित[3] सकल नर नारी भोजन कियो कन्हाईजी ॥
कहत सकल मिल आन देव कोउ ऐसे परछत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नन्द कह्यो मांगों कहा, दरश देख भयो निहाल ॥
सकल सिद्धि तुम्हरो दियो, करुणासिंध दयाल ॥

चौबोला—करुणासिंध दयाल नाथ तुम मैंहूं दास तुम्हाराजी ॥
मोह विवस प्रभु तुमहिं न जाने यह अज्ञान हमाराजी ॥
नाथ तुमहिं बिसार भूलमैं फिरचो देवनके द्वाराजी ॥
पूजा जानहिं कहा तुम्हारी हम अहीर गँवाराजी ॥ १ ॥
आपहि स्वप्न दिखायो हरिको करी कृपा गिरिराईजी ॥

१ बराबर। २ मेरा। ३ दुचित्ते।

बालकसो तुम दई बडाई लीनों प्रभु अपनाईजी ॥
अब हमैं डर नहिं काऊको शरण तुम्हारी पाईजी ॥
कहा करसकै हमारो नाथा सुरपति ब्रजपर आईजी ॥ २ ॥

दोहा–तुमहीं सबके ईशहो, करता हरता नाथ ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड प्रभु, रोम प्रती तुम गात ॥

चौबोला–रोम प्रती तुम गात नाथमैं शरण तिहारी आयोजी ॥
राम श्यामको कुशल राखियो यह हमरे मन चायोजी ॥
दोऊ सुत ले चरणन राख्यो नंदहु शीश नवायोजी ॥
विहँस गिरी तब दोउअन मस्तक हस्त कमल परसायोजी ॥ १ ॥
नन्द गोप उपनन्द श्रीवृषभानु आदि सब आवेजी ॥
बारबार गिरिके चरणनमें परत प्रीति मन लावेजी ॥
दे प्रसाद निज पाणि गिरी जब तब मन सब सुख पावेजी ॥
जाहु सकल तुम घर अब निज निज यों गिरिराय सुनावेजी ॥ २ ॥

दोहा–कह्यो कृष्ण अब चलहु घर, कहत गिरी घरजान ॥
भली भांति पूजाकरी, सब गिरि लीनी मान ॥

चौबोला–सब गिरि लीनी मान दोउकर जोररहे शिरनाईजी ॥
भक्ति भाव सबके मनबाढी विनवत सब गिरिराईजी ॥
हरिकीनी गिरिकी परिकरमा परशि चरण सुख पाईजी ॥
देखि कहत सुरगण समुदाई धनि ब्रजलोग लुगाईजी ॥ १ ॥
धन्य नन्दको सुकृत पुरातन धनि पर्वत गिरिराईजी ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि हर्षि सुमन झरिलाईजी ॥
निज निज लोकन देव सिधाये ब्रजवासी घर जाईजी ॥
मुदित सकल ब्रजलोग लुगाई गिरिकी करत बड़ाईजी ॥

दोहा–धन्य धन्य यशुमति महरि, जिन ऐसो सुतजाय ॥
बड़ो देवता गिरिह मैं, दीनों प्रगट बताय ॥

चौबोला—दीनो प्रगट बताय कहत सब ब्रजवासी सुखपावैजी ॥
ग्वाल गोप सब परमसुखारे सब गिरिके गुणगावैजी ॥
वर्ष वर्ष प्रति इन्द्रहि पूजत कबहुँ न दरश दिखावैजी ॥
प्रगट देत दरशन गिरिराई सबके आगे खावैजी ॥ १ ॥
सबके मन यह बात गिरीकी परम हरष नरनारीजी ॥
खेलत नित नवख्याल नन्द गृह भक्तनके हितकारीजी ॥
दुष्टनके उर शाल्ह सुरन मुनि हरिजनके दुखहारीजी ॥
इन्द्रदेखि गोवर्धन पूजा कियो क्रोध मन भारीजी ॥ २ ॥
दोहा—ब्रजवासिन विसराय मोहिं, पूज्यो सब गिरिजाय ॥
नेक न संका उरकरी, दीनी कानि मिटाय ॥
चौबो०-दीनी कानि मिटाय तेतीसहि कोटि सुरनको राईजी ॥
मेघवर्त सब मेरे पायक देहों अबहि चडाईजी ॥
कियो अहीरन मम अपमाना कहाधौं मनमें आईजी ॥
जानबूझि इन मोहिं भुलायो गिरिपै भेट चढाईजी ॥ १ ॥
काहू इने दिये बहकाई मरण काल बुधि आईजी ॥
तुरत इन्हें अब देहुँ सजाई को तब करहि सहाईजी ॥
ब्रजजन मार पताल पठाऊं पर्वत खोद बहाईजी ॥
फूलि फूलि भोजन जिन खायो चिह्न न राखो राईजी ॥ २ ॥
दोहा—सकल गोप पूजाकरी, बड़ो देवता जान ॥
देहों ब्रजहि बहाय सब, कीनो मम अपमान ॥
चौबोला—कीनो मम अपमान जान मन कियो क्रोध सुरराईजी॥
प्रलयकालके मेघ सबनको लीने तुरत बुलाईजी ॥
ब्रजपर बरसहु जाय तुरत तुम तिन्हें कह्यो समुझाईजी ॥
बोरहु सब ब्रज लोक गोप सब पर्वत प्रथम बहाईजी ॥ १ ॥
मोसों अहिरन करी ढिठाई पूजा गिरिहि चढाईजी ॥

ताकारण मैं तुमहिं बुलाये लेवहु सैन सजाईजी ॥
गिरि समेत ब्रज देहु बहाई खोज रहन नाहिं राईजी ॥
कापर क्रोध करत प्रभु ऐसे कहत मेघ शिरनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आयसु तुम्हरी पाय हम, जावें ब्रजपर धाय ॥
पर्वत खोद बहाय सब, देहैं नाम मिटाय ॥
चौबोला—देहैं नाम मिटाय होत प्रभु प्रलय हमारे पानीजी ॥
रहत अक्षयबट तनक निसानी ब्रजकी कौन चलानीजी ॥
आप क्षमा कीजे सुरराई हम करिहैं महमानीजी ॥
यह सुनि इन्द्र बहुत हरषायो दियो पान सुख मानीजी ॥ १ ॥
चले मेघ सब शीश नवाई आये ब्रजपर धाईजी ॥
क्षणहींमें रवि गगन छिपाने नेक विलंब नाहिं लाईजी ॥
कीनों शब्द गरज घन भारी घटा भयानक आईजी ॥
आई घटा डरावन कारी कज्जलते अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चहुँ दिश लीनो घेर ब्रज, पवन प्रबल झकझोर ॥
गरज गरज घन घोर अति, चपला चमकत जोर ॥
चौबोला-चपला चमकत जोर देखि सब नर अरु नारि डराईजी
गये जे बन गायन लेते फिर आये घरको धाईजी ॥
अंध धुंध भयो अतिभारी पंथहु दीसतनाईजी ॥
ब्रजके नर अरु नारि जहां तहां राखतवस्तु उठाईजी ॥ १ ॥
बरसत उमड घुमड घहराई फिरत मेघकी मालाजी ॥
टेरत सुतको मात पितू सब अपने अपने बालाजी ॥
बितराने डोलत सब जित तित ब्रज जन सकल बेहालाजी ॥
देखि देखि मन माहिं हँसत हरि करत श्याम यह ख्यालाजी॥२॥
दोहा—अति व्याकुल नर नारि सब, पुरखन गारि सुनाय ॥
सुरपति निजकुल देवतजि, पूज्यो गिरिकोजाय ॥

चौबोला—पूज्यो गिरिको जाय दियोफल ह्वै प्रसन्न गिरिराईजी॥
लेहु सकल अब गोद पसारी फिर पूजो गिरिजाईजी॥
चल्यो विचारि कोप सुरराई देहे ब्रजहि बहाईजी॥
जो ये बड़ोदेव गिरिराई तो किन लेत बचाईजी॥ १॥
नन्दसुवन पूजा यह ठानी ताते चल्यो रिसाईजी॥
कहति यशोमति सों ब्रजनारी यह कहा कियो कन्हाईजी॥
सुरपति है कुलदेव हमारो ब्रजते दियो मिटाईजी॥
चल्यो आप ब्रज ऊपरधाई गिरिकिन करत सहाईजी॥ २॥

दोहा—घन गर्जत तरजत अती, ब्रजजन देखि डराय॥
विकल सकल भय मन करत, लरकन लेत उठाय॥

चौबोला—लरकन लेत उठाय गोपगण आपुसमें बतरावैजी॥
कहत बन्यो अब मरन संयोगू उबरन नाहिं उपावैजी॥
देखि देखि ब्रजकी दशा सब नन्द महर पछितावैजी॥
कियो निरादर सुरपतिको हम यों मन माहिं डरावैजी॥ १॥
सोचत मनहिं महर नँदराई लिये निकट दोउ भाईजी॥
रहे अतिहि पछिताय सकल मिल जुरे गोप तहां आईजी॥
कहत कृष्ण सों सब ब्रजवासी सुनहु श्याम सुखदाईजी॥
तुमतो सुरपति यज्ञ मिटायो दीनो गिरि पुजवाईजी॥ २॥

दोहा—इन्द्र मान खंडन कियो, तुमरे कहे कन्हाय॥
ताते सुरपति रिसभयो, दीने मेघ पठाय॥

चौबोला—दीने मेघ पठाय मेघ सो बरसत वाके पायकजी॥
बरसत अति जल जोर बूंदसो लागत अति दुखदायकजी॥
भीतर गाय गोप दुख पावैं बूडमरत घरि मायकजी॥
राखिलेहु अब ब्रजकेनायक तुम दुखमेटनलायकजी॥ १॥
दावानलते राखे जैसे अब राखो जगत्यारनजी॥

बकी विनाशन शकट संहारन तृण बत्सासुर मारनजी ॥
अघमर्दन बकबदन विदारन तुम ब्रजके दुखटारनजी ॥
दीजे अभय वेग नँदलाला बरसत मेघ अपारनजी ॥ २ ॥
दोहा—राखि लेहु अब ब्रजहरी, भक्तनके सुखदाय ॥
जब जब गाढपरीहमैं, तब तब करी सहाय ॥
चौबोला—तब तब करी सहाय इही अवसर प्रभु करहु सहाईजी॥
देखि विकल ब्रज लोग हरी सब ब्रजजनके सुखदाईजी ॥
धरहु धीर उरडरहु मती तुम बोले विहँसि कन्हाईजी ॥
चलहु सकल मिल गिरिके पाहीं धरहु ध्यान मन लाईजी ॥ १ ॥
रहिहै सुरपति मन पछिताई करिहै गिरिहि सहाईजी ॥
यह कहि हरि गोवर्धन आये लीने सबन बुलाईजी ॥
गाय वत्स ब्रज लोग लुगाई गये सकल सँग धाईजी ॥
सबहिनके देखत नँदलाला लीनो गिरिहि उठाईजी ॥ २ ॥
दोहा—छिंगुलिछोर लियो वामकर, तब हरि कह्यो सुनाय ॥
आवहु तुम सब याहि तर, गिरि कर लईसहाय ॥
चौबोला—गिरि कर लई सहाय नर अरु नारि गोप सब गाईजी ॥
भये सकल क्षण माहिं सुखारे देखत अचरज पाईजी ॥
चकित कहत सब लोग लुगाई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
परसत चरण धाय सब हरिके उर आनन्द बढाईजी ॥ १ ॥
किहिं विधिकरी सहाय गिरीने यों हरि वचन सुनायोजी ॥
भक्तनहित हरि गिरी उठायो गिरिधर नाम धरायोजी ॥
गिरिधर नाम परचो तबहीं ते करगिरिराज उठायोजी ॥
देखे अति व्याकुल सब ब्रजजन सबको सोच मिटायोजी ॥ २ ॥
दोहा—सकल गोप जैजै करत, आनँद उर न समाय ॥
तिन मधि ठाढो साँवरो धर नखपर गिरिराय ॥

चौबोला—धर नखपर गिरिराय अखंडित बरसत मूसलधारीजी॥
अंध धुंध आकास चहूंदिश पवन चलत अति भारीजी॥
वज्रनीर गंभीर पुनि पुनि गरज गिरी पर डारीजी॥
करत अती उतपात ब्रजहिपर मेघ भयानक कारीजी॥ १॥
बार बार चपला[1] चमकत अति चकचौंधति चहुँघाईजी॥
अरर अरर आकासहिते जल डारत घन घहराईजी॥
कीन्हो गिरिहि अती विस्तारा हरिजनके सुखदाईजी॥
सब ब्रजलियो बचाय हरीने बूंद न भूपर[2] आईजी॥ २॥

दोहा—कहत गोप भय पायमन, नीके धरहु कन्हाय॥
अतिकोमल तुम्हरी भुजा, महा प्रबल गिरिराय॥

चौबोला-महाप्रबल गिरिरायगिरिहि कहुँ धीरकवन विधिआवैजी
महा भार गिरि कोमल बाहीं देखि नन्द पछितावैजी॥
दाबत भुजा यशोमति माई बार बार बलिजावैजी॥
देखि भार अति मन पछितावै पुनि पुनि गिरिहि मनावैजी॥१॥
करियो गिरि हरिकी रखवारी अपनो भार सँभारीजी॥
पय[3] पकवान मिठाई मेवा सेवा करिहौं तुम्हारीजी॥
मात पिताहि हरि देख दुखारी बुद्धि रची बनवारीजी॥
तुमहूं सब मिल करहु सहाई नंदहि कहत मुरारीजी॥ २॥

दोहा—लै लै लकुट लगाय सब, सोच मनहिं जिनल्याय॥
आप भयो गिरि सहाय अब, कह्यो मुहिलेहु उठाय॥

चौ०—कह्योमुहिंलेहु उठाय सुनत सब जहँ तहँ लकुटलगाईजी॥
कहत श्याम तब नन्द महरसों भलो लियो उचकाईजी॥
देखि देखि लीला हँसत तहां ढिग ठाढे बलिभाईजी॥
करत चरित भक्तनहितकारी कौतुक[4] निधि सुखदाईजी॥ १॥

१ बिजली। २ पृथ्वीपर। ३ दूध। ४ तमाशा।

सात दिवस बीते इहि भांती निशि दिन झरी लगाईजी ॥
कोप कोप डारत जलधारा ब्रजमें बूंद न आईजी ॥
जलत जलद जल बीचहि अंबर वैसोइ गिरिः सुहाईजी ॥
घर जल पवन अनल नभ जाको कहा करिहै सुरराईजी ॥२ ॥

दोहा—गयो बीत द्वैगुण सलिल, रह्यो एक गुण आय ॥
भये जलद राते सकल, कहन लगे पछिताय ॥

चौबोला—कहन लगे पछिताय बात सब आपुसमें बतराईजी ॥
पठये हमें इन्द्रदे आदर ब्रजपर बरसहु जाईजी ॥
कह्यो देहु ब्रजजाय बहाई कहिहैं कहा अब भाईजी ॥
ब्रजमें बूंद न जात प्रलय जल बरसे हम सब आईजी ॥ १ ॥
भये मेघ मनमें अति कादर किहिं विधि बदन दिखाईजी ॥
कहत मेघ सुनहू सुरराई तुमसों कहत लजाईजी ॥
कैमारौ कैशरण उबारो ब्रजपर नाहिं बसाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सात दिवस परलै सलिल, हम बरसे ब्रजजाय ॥
ब्रजबासिन भाये नहीं, निदरचो हमैं बनाय ॥

चौबोला—निदरचो हमें बनाय बूंद इक पहुँचि न ब्रजमें जाईजी ॥
कहत लगत लज्जा हमें भारी यह कछु जानि न जाईजी ॥
यह सुनि चकित भयो सुरराई बूझत मेघ बुलाईजी ॥
कहा भयो परलैको पानी ब्रजकी बात न पाईजी ॥ १ ॥
पर्वतमें कोउहै अवतारा सुरपति मनहिं उपाईजी ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये सुनतहि आये धाईजी ॥
कौन काज सुरराज बुलाये कहत देव शिरनाईजी ॥
तबहीं देवनसों सुरराई ब्रजकी बात चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मोहिं मेट थाप्यो गिरिः, तबमैं मनहि रिसाय ॥
दीने मेघ पठाय सब, आवहु ब्रजहि बहाय ॥

चौबोला—आवहु ब्रजहि बहाय ते वरसे महाप्रलय जल जाईजी॥
ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राई सो कछु बात न पाईजी॥
आये मेघ हार सब रोई कारण देहु बताईजी॥
देवन कह्यो सुनहु सुरराई ब्रजहरि प्रगटे आईजी॥ १॥
तुम जानत प्रभु भूमि हरीपै दुखित पुकारी जाईजी॥
कह्यो लेन अवतार हरी तब सो विहरत ब्रज आईजी॥
मैं भूल्यो जानो नाहिं हरिको कहत इन्द्र पछिताईजी॥
भयकर मन व्याकुल भयो भारी कीनी बहुत ढिठाईजी॥ २॥

दोहा—मैं सुरपति जिनको कियो,तिन आगे बलिचाय॥
रवि आगे खद्योत जिमि, भई बुद्धि मम आय॥

चौबोला—भई बुद्धि मम आय करी मैं यह बहुतहि अधिकाईजी
कहा करों अब मन पछितावै दीसत नाहिं उपाईजी॥
ब्रजहि चलो नहिं आन उपाई कह्यो सुरन समुझाईजी॥
वेहैं प्रभू दयाल कृपाला क्षमा करहिं सुखदाईजी॥ १॥
सुनि विचार कीनों सुरराई मन मन रह्यो लजाईजी॥
तदपि वे स्वामी मैं दासा करिहैं कृपा कन्हाईजी॥
शरण गये जोहोय सो होई बनत न वदन छिपाईजी॥
यह विचार मनमें ठहरायो चल्यो शरण सुरराईजी॥ २॥

दोहा—कामधेनु करि अग्र तब, सुरन सहित ब्रजजाय॥
अति सोचत मन सुरपती, आगे परत न पाँय॥

चौबोला—आगे परत न पाँय जगतके पतिसों करी ढिठाईजी॥
कहिहौं कहा वदन दिखराई सोचत मन सुरराईजी॥
शरण शरण कहि अति उताल जब चरणन परिहों जाईजी॥
शरणागत पालन विरद तब तजिहैं नाहिं कन्हाईजी॥ १॥
करिहैं कृपा कृपालु प्रभू जब दीन वचन सुनिकानीजी॥

सुरनायक आये ब्रजही तब यहै कहत अनुमानीजी ॥
देखि सुरनकी भीर अहीरा अति मनमें भय जानीजी ॥
दौरि कृष्णसों जाय सुनायो इन्द्र सैन सज आनीजी ॥
दोहा–कहत श्याम हँसि मतिडरो, गिरि ताजि जनि कहुँजाय ॥
ब्रजबाहर सैना तजी, चल्यो आप निज धाय ॥
चौ-चल्यो आप निज धाय सकुच मन गयो कृष्ण शरणाईजी॥
कछुक दुखित मन कछुक हुलासा परचो चरणमें जाईजी ॥
धाय परचो चरणनमें जाई कृपासिंधु शरणाईजी ॥
बिसरचो तुमहिं तुम्हारी माया तुम बिन और न सहाईजी॥१॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि वाणी रह्यो चरण शिरनाईजी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई चूक परी अधिकाईजी ॥
मैं अपराध कियो विन जानी क्षमा करहु सुखदाईजी ॥
जो बालक पितु सों बिरुझावे लेतहिं गोद उठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ऐसेहिं मोहिं करो प्रभू, जगत ईश जगतात ॥
जैसे सुतपर करत हित,अति सनेह पितुमात ॥
चौबोला–अति सनेह पितु मात सुनत प्रभु दीनबंधु सुखदाईजी
अभय कियो करधरे माथ हरि उठा लियो गहिबाईजी ॥
देखि दीनता अतिहिं इन्द्रकी लीनों हृदय लगाईजी ॥
बारबार परसत प्रभु चरणन शिर नहिं सकत उठाईजी ॥ १ ॥
कहत इन्द्र सों कुँवर कन्हाई कत सकुचत मन माईजी ॥
मैं तुमसों कीनी अधिकाई पूजा तुम्हरी खाईजी ॥
भली करी ब्रज बरसे पानी मैं कछु नाहिं रिसाईजी ॥
अनजाने तुम करी ढिठाई मति डरपहु सुरराईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहा भयो मेघ पठादिये, मैं ब्रजलियो बचाहिं ॥
तुम कछु उर में जिनडरो, मैं तुम पररिस नाहिं ॥

चौबोला-मैं तुमपर रिस नाहिं भली करी ब्रज देखन तुम आयेजी
तुमहिं देखि मैं अति सुख पायो मेरे मन में भायेजी॥
अब अपने मन सोच मिटावो सुनि सुर[1] अति सुख पायेजी॥
सुनि हरि वचन देव कहि जय जय हर्षि सुमन[2] बरसायेजी॥ १॥
पुलकि अंग मुख गदगद वाणी धनि जनके सुखदाईजी॥
अशरण शरण तुम्हारो बानों लीला तुमहिं बनाईजी॥
धन्य धन्य सब ब्रजके वासी जिनके प्रेम बसाईजी॥
प्रभुहिं देखि अनुकूल भयो मन धीरधरचो सुरराईजी॥ २॥

दोहा-मिटी त्रास उरते तहूँ, यह कहि कहि पछितात॥
कहत बारही बार प्रभु, तुमगति जानि न जात॥

चौबोला-तुमगति जानि न जातमैं भूल्यो हरि पैचाने नाईजी॥
प्रभु आगे चाहोंमैं पूजा मोते मंद कोउ नाईजी॥
अहो नाथ तुम प्रभुमैं दासा क्षमा करहु सुखदाईजी॥
कोटिन इन्द्र तुम्हारे गाँता[3] मेरी कौन चलाईजी॥ १॥
मैं अपराध कियो यहभारी राखहु वोर निहारीजी॥
दीनबंधु तुम जन हितकारी कह सब वेद पुकारीजी॥
कृपाकरी प्रभु दरशन पाये आजाहिं भयो सुखारीजी॥
ये दिन वृथा गये बिनकाजा जाने नाहिं मुरारीजी॥ २॥

दोहा-धन्य प्रभू गिरिवर धरचो, भक्तनके हितकार॥
दैत्य दलनै[4] संतन सुखद, गोद्विज हित अवतार॥

चौबोला-गोद्विज हित अवतार प्रभू अब विनती सुनहु हमारीजी
अब गिरिवर धरणीपर धरिये करो कृपा गिरिधारीजी॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी गिरिवर धरचो उतारीजी॥
सुरन सहित सुरराय अनंदे स्तुति जोर उचारीजी॥ १॥

१ देवता। २ फूल। ३ शरीर। ४ नाशक।

धेनू आगे राखि सुरपती सन्मुख स्तुति गाईजी ॥
नाम गोविंद राखि हरीको बंदत पद शिरनाईजी ॥
जै कृपालु मुकुंद माधव अविगतिगति नाहिं पाईजी ॥
गोपपति राजीवलोचन भक्त जनन सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वासुदेव भगवंत हरि, कंस काल ब्रजराज ॥
हरण भवभय भारमही, मद मोचन अहिराज ॥

चौबोला—मद मोचन अहिराजबकी अरु तृणावर्त अति भारीजी
वत्सा वका अघासुर हारी शकटा भंजन कारीजी ॥
अतिहिं दुष्ट अरिष्ट धेनुक असुर वंश संहारीजी ॥
चोर माखन खात घर घर भंजन तरु दुखहारीजी ॥ १ ॥
योगी जन जप तपकरि ध्यावें निशि दिन ध्यान लगाईजी ॥
धनि ब्रजवासिन प्रेम विबस हरि ब्रज में प्रगटे आईजी ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना वृन्दावन सुख दाईजी ॥
धन्य गोपी गोप यशुदा नन्द अरु गिरिराईजी ॥ २ ॥

दोहा—करि स्तुति मन हर्षिअति, परचो इन्द्र प्रभु पाय ॥
है प्रसन्न सुर धेनुयुत, विदा कियो यदुराय ॥

चौबोला—विदा कियो यदुराय सुरपती गयो लोक शिरनाईजी॥
ब्रजजन परमानंद चकित सब निरखत कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत गोप सब आपुसमाई इन समान कोउ नाईजी ॥
सात बरसको बालकको बल इतनो कहांते आईजी ॥ १ ॥
है यह पारब्रह्म भगवाना करत चरित सुखदाईजी ॥
दैत्य किते छल कारि कारि आये दीने सकल नशाईजी ॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहिं पुजायो निज स्वरूप प्रगटाईजी ॥
इन्द्र प्रलय घन दिये पठाई ते बरसे ब्रज आईजी ॥ २ ॥

दोहा—सात दिवस वरसे सलिल, गिरि कीनो विस्तार ॥
लीने गोप बचाय सब, नखपर गिरिवर धार ॥
चौबोला—नखपर गिरिवरधार बूंद इक पहुँचि नब्रजमें आईजी॥
लीने सब ब्रज लोग बचाई कीन्ही सहाय कन्हाईजी ॥
हार मानसुर पतिहि डरायो आयो हरि शरणाईजी ॥
कामधेनु देवनको ल्यायो अभय कियो सुखदाईजी ॥ १ ॥
मानुषसों यह होय न करनी अचरज कहत न आईजी ॥
परे गोप हरि चरणन आई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
हम तुमको जानत नहिं स्वामी तुम त्रिभुवनके राईजी ॥
ब्रजवासिन सुख देनकाज तुम प्रगटे ब्रजमें आईजी ॥ २ ॥
दोहा—परत विपत जहँ तहँ हमें, तुम कर लेत सहाय ॥
विषते जलते अनलते, लीने हमें बचाय ॥
चौबोला—लीने हमें बचाय विचारति सब ठाढीं ब्रजनारीजी ॥
प्रेम उमँगिमन आनँद भारी कहति धन्य बनवारीजी ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई कोमल तनु सुखकारीजी ॥
लेतधरत जान्यो नहिं काऊ धनि धनि कृष्ण मुरारीजी ॥ १ ॥
सात दिवस प्रलय जलडारचो परचो चरणमें आईजी ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हाई लीनो गिरिहि उठाईजी ॥
यह करतूत करत तुम कैसे केतिकबल तुम माईजी ॥
हम सँग सदा रहतहो ऐसे चारत हो नित गाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चरण गहे यशुमति महरि, चूमि वदन उरलाय ॥
अति स्नेह भरि नैनजल, पुनि पुनि लेतबलाय ॥
चौबोला—पुनि पुनि लेतबलाय लालतुम कैसेगिरिहिउठायोजी॥
अति कोमलभुज तुम दिनसाता किहिं विधि गिरि ठहरायोजी॥
हँसि माता सों कहत कन्हाई मैं न कछू श्रमपायोजी ॥